तापमान
अधिकतम 21.7 डिग्री
न्यूनतम 2.9 डिग्री

हरिभूमि
सोनीपत भूमि
रोहतक, रविवार 11 जनवरी 2026

11 हिंदी निबंध लेखन में कमल व सपना की टीम अव्वल

12 संस्कार युक्त शिक्षा से ही सशक्त बन पाएगा समाज

खबर संक्षेप

शिक्षामंत्री आज स्कूल के कमरों का उद्घाटन करेंगे

गन्नौर। प्रदेश के शिक्षा मंत्री महिपाल ढांडा रविवार को गांव सनपेड़ा स्थित राजकीय विद्यालय में नवनिर्मित कमरों का उद्घाटन करेंगे। यह जानकारी गांव के सरपंच प्रमोद ढाका ने दी। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में विधायक देवेंद्र कादियान, जिला शिक्षा अधिकारी नवीन गुलिया भी शिरकत करेंगे। विद्यालय में नए कमरों के निर्माण से छात्रों को बेहतर शैक्षणिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी और शिक्षण कार्य अधिक सुचारू रूप से संचालित किया जा सकेगा। सरपंच ने कहा कि काफी समय से स्कूल में चार नए कमरों के निर्माण की आवश्यकता थी। जिसके चलते पंचायत द्वारा स्कूल में कमरों का निर्माण करवाया।

कार ने ऑटो को टक्कर मारी, एक घायल

गन्नौर। रोशनपुर के पास कार की टक्कर से आटो में सवार एक व्यक्ति घायल हो गया। टक्कर मारने के बाद कार चालक मौके से फरार हो गया। घायल ने मामले की शिकायत थाना बड़ी में दी। शिकायत में नेपाल निवासी वर्तमान में दातौली स्थित कृष्णा पोल्ट्री फार्म में रह रहे फतु राणा ने बताया कि 7 जनवरी को वह बस अड्डे के पास से घरेलू सामान लेकर एक आटो में सवार होकर दातौली जा रहा था। जब आटो रोशनपुर गांव के पास पहुंचा, तभी सामने से आ रही एक कार ने टक्कर मार दी। इस हादसे में उसके दोनों पैरों में गंभीर चोटें आई।

तार चोरी करने का आरोपी गिरफ्तार

गोहाना। थाना सदर गोहाना की पुलिस टीम ने बिजली की तार चोरी करने की घटना मे संलिप्त आरोपित गांव खानपुर कलां निवासी देवाशीष पुत्र संजय को गिरफ्तार कर लिया। उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम सब डिविजन गोहाना के एसडीओ ने थाना सदर गोहाना मे शिकायत दी थी कि 22 मई 2025 की रातको अज्ञात चोरों ने खानपुर से मुंडलाना मार्ग पर माइनर पर लगभग 3000 मीटर तार चोरी कर लिया था। इससे विभाग को करीब डेढ़ लाख रुपये का वित्तीय नुकसान हुआ। थाना सदर गोहाना की अनुसंधान टीम में नियुक्त उप निरिक्षक मुकेश ने अपनी पुलिस टीम के साथ घटना में संलिप्त उक्त आरोपित को गिरफ्तार कर लिया।

नई शिक्षा नीति पर शिक्षा विभाग की दो दिवसीय कार्यशाला का दूसरा सत्र संपन्न

नौनिहालों को बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान में निपुण बनाएंगे 'गुरुजी' 1467 ने लिया प्रशिक्षण

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

जिला के सभी सात खंडों में बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान (एफएलएन) के तहत शीतकालीन अवकाश के चलते प्राथमिक शिक्षकों के लिए दूसरे सत्र की दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का समापन किया गया। दूसरे सत्र में जिलाभर में 1467 शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। सोनीपत खंड के लिए गढ़ी ब्राह्मणान स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में कार्यशाला का खंड शिक्षा अधिकारी सूरजभान निरीक्षण कर शिक्षकों के साथ जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण का उद्देश्य प्राथमिक स्तर पर बच्चों की पढ़ने, लिखने एवं गणितीय समझ को मजबूत करना है। खंड शिक्षा अधिकारी सूरजभान ने एफएलएन मिशन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए शिक्षकों को नवाचारपूर्ण शिक्षण विधियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि मजबूत आधार ही बच्चों के शैक्षणिक भविष्य को सशक्त बनाता है। कार्यशाला का संचालन नोडल अधिकारी एवं प्राचार्य अतुल खट्टर ने किया। उन्होंने प्रशिक्षण की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि दो दिवसीय प्रशिक्षण में शिक्षकों को गतिविधि आधारित शिक्षण, सीखने के परिणाम, आकलन तकनीक एवं कक्षा प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की गईं। कार्यशाला में एफएलएन के जिला संयोजक मनोज वर्मा, मास्टर ट्रेनर के रूप में डॉ. मोनिका दहिया, सुनील सरोहा सीमा, ऋतु, प्रीति, अंजू, कमलेश, शशि प्रभा ने शिक्षकों के साथ जानकारियां साझा की। कार्यशाला में मंजू, ईशा, वंदना, हरेंद्र, अनिल, अजय मौजूद रहे।

खंड शिक्षा अधिकारी ने बांटे प्रमाण पत्र

खंड शिक्षा अधिकारी सूरजभान ने कार्यशाला के प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद प्रमाण पत्र प्रदान किए। उन्होंने प्रतिभागी शिक्षकों को नई शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने का आह्वान किया, ताकि उन्हें हर तरह से निपुण बनाया जा सके। प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों ने समूह गतिविधियों के माध्यम से अपने अनुभव साझा किए। कार्यक्रम के समापन पर सकारात्मक फीडबैक, प्राथमिक शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाने के संकल्प भी लिया गया। इस मौके पर शिक्षा विभाग के अन्य अधिकारी भी मौजूद रहे।

शिक्षा के स्तर में सुधार होगा

जिले के सभी प्राथमिक अध्यापकों के लिए निदेशालय के तत्वावधान में आयोजित की गई दूसरे सत्र की दो दिवसीय कार्यशाला संपन्न हो चुकी है। कार्यशाला का उद्देश्य शिक्षा में पिछड़ रहे विद्यार्थियों के लिए अलग रणनीति बनाना, किस तरह से उनका स्तर अन्य विद्यार्थियों के समकक्ष लाया जाए, ताकि उनका पढ़ाई का स्तर उच्च बनाया जा सके, इस पर शिक्षकों को विस्तृत जानकारी देना रहा, ताकि बच्चों को निपुण बनाया जा सके।
- रचना बाना, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी, सोनीपत

इन्होंने लिया प्रशिक्षण

- खंड सोनीपत के राजकीय विद्यालय, गढ़ी ब्राह्मणान में एक साथ चार समूह में 326 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया
- गन्नौर के राजकीय विद्यालय में एक साथ तीन समूहों में 265 शिक्षकों ने प्रशिक्षण लिया
- गोहाना के राजकीय कन्या विद्यालय में एक साथ दो समूहों में 165 ने कार्यशाला में भाग लिया
- खंड कथूरा के राजकीय माध्यमिक विद्यालय, गुढ़ा में एक समूह 76 शिक्षक प्रशिक्षित
- खरखौदा के बीआरसी कार्यालय में दो समूह में 170 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया
- मुंडलाना में राजकीय विद्यालय खंडराई में दो समूहों में 152 टीचर्स को प्रशिक्षण दिया
- राई में राजकीय मॉडल संस्कृति विद्यालय, बीसवां मील में एक साथ चार समूहों 313 शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया

आज से नए भवन में रिजर्वेशन की सुविधा, दिनभर काम में जुटे रहे रेलवे कर्मचारी

रेलवे टिकटों की बुकिंग के लिए नहीं करनी पड़ेगी मारामारी, विंडो चार से बढ़ाकर की छह

रविंद्र ठाकुर ⏭ सोनीपत

अमृत भारत स्टेशन परियोजना के तहत सोनीपत स्टेशन पर 29 करोड़ रुपये से किए जा रहे विकास कार्य, करीब 40 हजार यात्रियों को मिलेगा लाभ

रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध करवाने व मॉडल स्टेशन के रूप में विकसित करने के उद्देश्य से निर्माण कार्य तेजी से चल रहे हैं। रेलवे ने 11 जनवरी रविवार को बुकिंग कार्यालय नए भवन में स्थानांतरित करने का निर्णय लिया है। अब तक बुकिंग कार्यालय पुराने भवन में चल रहा है। शनिवार को मजदूर नए भवन में बुकिंग कार्यालय की कमियों को पूरा करते नजर आए। साथ ही यात्रियों के लिए नए बेंच लगाने के साथ सफाई व्यवस्था को दुरुस्त करवाया गया। सोनीपत स्टेशन पर नए बुकिंग कार्यालय में कर्मचारियों के साथ यात्रियों के लिए भी आधुनिक व्यवस्थाएं की गई हैं। पहले की अपेक्षा टिकट विंडो को बढ़ाकर 4 से 6 किया गया है। हर विंडो को ग्रिल लगाकर अलग-अलग पंक्ति में बांटा गया है। इनमें से एक सहयोग विंडो होगी, जिस पर यात्री ट्रेनों संबंधी जानकारी ले सकेंगे। इसी विंडो से माइक व स्पीकरों के जरिये सभी प्लेटफार्म पर ट्रेनों संबंधी अनाउंसमेंट की जाएगी। अमृत भारत स्टेशन परियोजना के अंतर्गत दिल्ली मंडल के करीब 14 स्टेशनों पर होने वाले विस्तार कार्यों में सोनीपत भी है।

सोनीपत स्टेशन पर करीब 29 करोड़ रुपये की लागत से विभिन्न विकास कार्य 85 फीसदी पूर्ण हो चुका हैं। इससे रोजाना दिल्ली-अंबाला रूट पर आवागमन करने वाले करीब 40 हजार यात्रियों को लाभ मिल सकेगा। स्टेशन के मुख्य प्रवेश-निकासी द्वार पर भवन निर्माण के बाद आगे पार्किंग क्षेत्र का विस्तार जारी है। रेलवे अधिकारियों के नेतृत्व में कार्यरत गुरुग्राम की कंपनी ने मार्च 2026 तक प्रथम चरण के कार्यों को पूरा करने का लक्ष्य रखा है। वहीं दिसंबर 2025 में करीब दो साल बाद मुख्य प्रवेश द्वार के सामने का रास्ता वाहन चालकों व यात्रियों के आवागमन के लिए खोल दिया गया है।

- मुख्य प्रवेश-निकासी द्वार पर निर्माणाधीन भवन में कार्यालय तैयार, यात्रियों के लिए पहले से ज्यादा होंगी खिड़कियां, बैठने के लिए लगे नए बैंच
- प्रवेश द्वार के आगे पार्किंग क्षेत्र के विस्तार व वर्टिकल गार्डन के जल्द निर्माण पर भी फोकस

ए ग्रेड श्रेणी में शामिल सोनीपत स्टेशन पर दिव्यांग यात्रियों की सुविधा के लिए दिशा सूचक बोर्ड भी लगाए जाएंगे

मुख्य द्वार के सामने बीचों-बीच वर्टिकल गार्डन का निर्माण भी करवाया जा रहा है। वर्टिकल गार्डन में विभिन्न प्रजाति के पौधे लगाकर इसे आकर्षक रूप दिया जाएगा। ए ग्रेड श्रेणी में शामिल सोनीपत स्टेशन पर दिव्यांग यात्रियों की सुविधा के लिए दिशा सूचक बोर्ड भी लगाए जाएंगे। कोच गाइडेंस सिस्टम, फूड प्लाजा, स्वचालित सीढ़ियां बढ़ाएंगे शोभा सोनीपत स्टेशन पर आधुनिकरण के बाद कोच गाइडेंस सिस्टम, भवन के अंदर प्रतीक्षालय कक्ष, फूड प्लाजा कोर्ट, कैंटीन, महिलाओं, पुरुषों व दिव्यांग जन के लिए अलग-अलग आधुनिक शौचालयों की व्यवस्थाएं होने के बाद शोभा को चार चांद लग जाएंगे। स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक पर स्वचालित सीढ़ियां लग चुकी है, जबकि कुल 3.84 करोड़ रुपये की लागत में चार और स्वचालित सीढ़ियां लगाई जाएंगी। मुख्य प्रवेश द्वार पर नए भवन की छत पर पांच पांडवों के नाम से पांच गुबंद महाभारत काल की याद दिलाएंगे। इससे स्टेशन पर आवागमन करने वाले यात्रियों को सुविधाएं मिलने के साथ स्टेशन जिले की शोभा बढ़ाएगा।

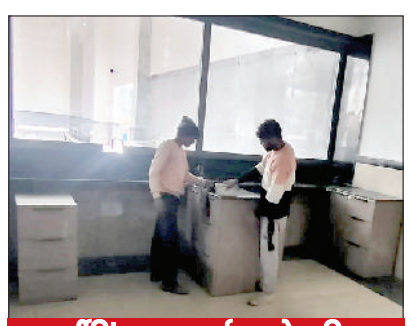

फर्नीशिंग का कार्य करते श्रमिक

सोनीपत। नए भवन में यात्रियों के लिए लगाए गए नए बेंच व सफाई करते कर्मचारी।

रेलवे स्टेशन पर 85 फीसदी कार्य पूरा

अमृत भारत स्टेशन परियोजना के अंतर्गत सोनीपत स्टेशन पर 85 फीसदी कार्य पूर्ण कर लिए गए हैं। मुख्य प्रवेश-निकासी द्वार पर भवन में 11 जनवरी को बुकिंग कार्यालय नए भवन में स्थानांतरित करने का निर्णय लिया गया है। पार्किंग क्षेत्र का विस्तार, वर्टिकल गार्डन का निर्माण भी जल्द पूरा करवाया जाएगा। यात्रियों को जल्द स्टेशन पर आधुनिक सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा। रेलवे ने मार्च 2026 तक काम पूरा करवाने का लक्ष्य रखा है।
-पुष्पेश रमन त्रिपाठी, रेल प्रबंधक (डीआरएम), दिल्ली मंडल

सोनीपत। पुराना बुकिंग कार्यालय।

कर्ज और भूमि विवाद से परेशान किसान ने खेत में बने कमरे में फंदा लगाया

हरिभूमि न्यूज ⏭ गोहाना

गांव अहमदपुर माजरा में कर्ज और जमीन को लेकर चल रहे विवाद से परेशान किसान ने फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक के बेटे मोहित ने चार लोगों पर उसके पिता को आत्महत्या के लिए विवश करने का आरोप लगाया। पुलिस और एफएसएल की टीम ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। शव को पोस्टमार्टम के लिए सरकारी अस्पताल भिजवाया। गांव गंगाना के कुलदीप, गांव टेहा के आशीष, गांव अहमदपुर माजरा के इंद्र व ईश्वर पर केस दर्ज किया गया। मोहित ने बताया कि उसके पिता राजेश ने करीब एक साल पहले गांव गंगाना के कुलदीप और गांव टेहा के आशीष से 16 लाख रुपये ब्याज पर लिए थे। इसके बदले में उसके पिता ने एक एकड़ जमीन गिरवी रखी थी। तय समय पूरा होने पर जब उसके पिता पैसे लौटाने पहुंचे तो वे टालमटोल करते रहे और शराब पिलाकर जमीन बेचने का दबाव बनाते रहे। बाद में उनसे कहा गया कि वह अपनी सारी जमीन अपनी बेटी के नाम कर दें, तभी पैसे वापस मिलेंगे। जमीन नाम कराने के लिए समय दिया जाता रहा। मोहित के अनुसार उसके पिता का कर्ज बकाया होने के बावजूद उसके ताऊ इंद्र और ईश्वर को जमीन बेच दी। इसके बाद उसके पास कुलदीप के पास गए और कि उसका बकाया 13.75 लाख रुपये वापस कर दे या जमीन वापस दे। आरोपितों ने ऐसा नहीं किया और जमीन खाली करने का दबाव बनाया। इसी से परेशान होकर उसके पिता ने खेत में जाकर वहां बने कमरे के बरामदे में रस्सी से फंदा लगाकर जान दे दी।

- पुलिस ने बेटे की शिकायत पर चार के खिलाफ केस दर्ज किया

नकली देसी घी मामले में जींद का युवक गिरफ्तार

गोहाना। नकली देशी घी की तस्करी के मामले में थाना शहर की पुलिस ने आरोपित जींद में श्याम नगर के आनंद को गिरफ्तार किया। न्यायालय के आदेश पर उसे दो दिन के पुलिस रिमांड पर लिया। शहर थाना की पुलिस ने 10 दिसंबर 2025 को जींद की तरफ से आई एक गाड़ी को खंदराई मोड के निकट पकड़ा था, जिसमें देशी घी के पैकेट भरे थे। पुलिस ने जांच के लिए वीटा मिल्क प्लांट जींद के गुणवत्ता नियंत्रण में सहायक प्रबंधक बादल को मौके पर बुलाकर जांच कराई थी।
गाड़ी में देशी घी की 35 पेटियां भरी हुई जिनके अंदर 450 लीटर वीटा का नकली घी मिला था। बादल की शिकायत पर केस दर्ज करके पुलिस ने उस समय चालक जींद में गुरुद्वारा कालोनी के सुनील को गिरफ्तार किया। बाद में जींद के राजेंद्र नगर के नंदकिशोर को गिरफ्तार किया, जो घी की फैक्ट्री चलाता था।

सफाई कर्मचारियों को लेकर फील्ड में उतरे मेयर

कूड़े के ढेर किए साफ, घास भी काटी

दो घंटे में शहर का सेक्टर 23 मोड़ राजीव कॉलोनी व अन्य क्षेत्र चकाचक

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

नगर निगम के मेयर राजीव जैन ने हर शनिवार स्वच्छता अभियान के तहत हैबिटैट क्लब गोहाना रोड से सेक्टर 23 मोड़ एवं राजीव कॉलोनी मोड़ से गेटवे स्कूल सेक्टर 15-16 डिवाइडिंग रोड तक सफाई करवाई। दो घंटे तक चले इस अभियान में कई ट्राली कूड़ा साफ करवाया गया। स्वच्छता अभियान के तहत रोजाना साफ न होने वाले कूड़े के ढेर उठवाये तथा सड़क किनारे बड़ी हो चुकी घास की भी सफाई करवाई। राजीव कॉलोनी मोड़ पर आर्य समाज मंदिर एवं हनुमान मंदिर के सामने जमा मलबे के ढेर एवं जमा कूड़े को मशीनें लगाकर उठवाया इसके साथ ही ग्रीन बेल्ट में बड़ी हो चुकी झाड़ियों भी साफ करवाई।

सोनीपत। सफाई अभियान चलाते कर्मचारी व मेयर।

राजीव जैन ने बताया कि यह अभियान मेरे मेयर कार्यकाल का अंतिम सप्ताह है और लगातार 28 सप्ताह तक हर शनिवार यह अभियान शहर के विभिन्न इलाकों में चलाया गया।

लोगों के सहयोग से शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाएंगे

उन्होंने आगे बताया कि इस दौरान कूड़े को साफ करवाने के साथ जनता में जागरूकता अभियान भी चलाया और उन्हें स्वच्छता के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि लोगों के सहयोग से शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाएंगे इस अवसर पर राजकुमार शर्मा मंडल अध्यक्ष, सतपाल कटारिया, संजय, सोनू सुहाग, शैलेन्द्र तोमर, विक्की शर्मा, जटवाड़ा से कुलदीप प्रजापति, भरत प्रजापति आदि कार्यकर्ता एवं सफाई कर्मचारी उपस्थित रहे।

आरोपी कुनाल अन्य मामले में न्यायिक हिरासत में, जांच में जुटी पुलिस

इंस्टाग्राम अकाउंट पर हथियारों की फोटो अपलोड करने पर युवक के खिलाफ केस

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

सोशल मीडिया पर हथियार के प्रदर्शन को लेकर पुलिस ने केस दर्ज किया है। सीआईए-1 को मिली सूचना के अनुसार इंस्टाग्राम आईडी पर हथियारों के साथ तस्वीरें पोस्ट की गई थीं। जांच में सामने आया कि प्रोफाइल का उपयोग देवडू रोड निवासी कुनाल की तरफ से किया गया था। उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई गई है।सीआईए-1 को जानकारी मिली थी कि सोशल मीडिया पर सक्रिय युवक ने अकाउंट पर हथियारों के साथ फोटो अपलोड की हैं। जांच के दौरान इन आपत्तिजनक पोस्ट के स्क्रीनशॉट भी संलग्न पाए गए, जिनमें हथियारों का प्रदर्शन किया गया था। सीआईए-1 प्रभारी इंस्पेक्टर बीर सिंह के नेतृत्व में की गई जांच में सामने आया है कि हथियारों के साथ फोटो में दिखाई देने वाला युवक कुनाल है।

पुलिस पार्टी पर कर चुका फायरिंग
मुठभेड़ में पैर पर लगी थी गोली

पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार कुनाल के खिलाफ पहले भी आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। वर्ष 2020 में हत्या और हत्या के प्रयास से संबंधित मुकदमा थाना मुरथल में दर्ज हुआ था। आरोपी के खिलाफ पुलिस पार्टी पर फायरिंग करने का मुकदमा दर्ज रहा है। तब आरोपी कुनाल के पैर में गोली भी लगी थी और उसे 5 सितंबर 2020 को गिरफ्तार किया गया था। दोनों ही मुकदमे वर्तमान में न्यायालय में विचाराधीन हैं।

हथियारों की पोस्ट गिरफ्तारी से पहले की

जांच में यह भी सामने आया कि इंस्टाग्राम पर डाली गई हथियारों से संबंधित पोस्ट वर्ष 2019 और 2020 की हैं जो आरोपी की गिरफ्तारी से पहले की बताई जा रही हैं। वर्ष 2020 के बाद से आरोपी विभिन्न जेलों में बंद रहा है और वर्तमान में जिला मेवात जेल में है। उसके खिलाफ थाना सेक्टर-27 में प्राथमिकी दर्ज की गई है।

वाहन ने स्कूटी को टक्कर मारी, युवक की जान गई

खरखौदा। छिनौली मोड़ के पास अज्ञात वाहन ने स्कूटी सवार को टक्कर मार दी। गंभीर रूप से घायल युवक को अस्पताल ले जाया गया। जहां इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। मृतक युवक के भाई राकेश ने बताया कि उसका भाई सतीश इन दिनों गाजियाबाद में रह रहा था। वह 2 दिन के लिए गांव में आया हुआ था। सुबह के समय वह अपनी स्कूटी लेकर घूमने गया था। रोहतक - खरखौदा मार्ग पर छिनौली मोड़ के पास किसी अज्ञात वाहन ने स्कूटी को टक्कर मार दी। जिससे वह बुरी तरह घायल हो गया। राकेश ने बताया कि घायल अवस्था में उसे बहालगढ़ स्थित फिम्स अस्पताल ले जाया गया। गंभीर हालत के चलते दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल रेफर कर दिया गया। जहां इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस सीसीटीवी खंगाल रही है।

सिबिल स्कोर अच्छा होने के बावजूद क्रेडिट कार्ड क्यों हो जाता है रिजेक्ट

सुझाव | बिजनेस डेस्क

आज के समय में क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुका है। लोग ऑनलाइन शॉपिंग, बिल पेमेंट, ट्रैवल और कैशलेस ट्रांजेक्शन के लिए क्रेडिट कार्ड का सहारा लेते हैं। आम धारणा यह है कि अगर आपका सिबिल स्कोर अच्छा है तो बैंक आसानी से आपका क्रेडिट कार्ड अप्रूव कर देगा, लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसा हमेशा जरूरी नहीं है। कई बार सिबिल स्कोर मजबूत होने के बावजूद भी बैंक क्रेडिट कार्ड रिजेक्ट कर देते हैं।

कार्ड की कैटेगरी व इनकम का मेल जरूरी

जानकारों का कहना है कि क्रेडिट कार्ड रिजेक्शन का सबसे बड़ा कारण कार्ड की कैटेगरी और आवेदक की इनकम होती है। उन्होंने कहा, "जिस क्रेडिट कार्ड के लिए आप आवेदन कर रहे हैं, क्या आपकी सैलरी उस कार्ड के लिए तय मानकों के अनुरूप है?" कई बार लोग प्रीमियम या हाई-कैटेगरी कार्ड के लिए आवेदन कर देते हैं, जबकि उनकी इनकम उस स्तर के कार्ड के लिए पर्याप्त नहीं होती। ऐसे मामलों में बैंक अप्रूवल देने से बचता है।

नौकरी की स्थिरता की अहम भूमिका

क्रेडिट कार्ड अप्रूवल में नौकरी की प्रकृति भी महत्वपूर्ण होती है। स्थायी नौकरी करने वाले कर्मचारियों को बैंक अपेक्षाकृत सुरक्षित मानते हैं। वहीं, कॉन्ट्रैक्ट या अस्थायी नौकरी करने वालों के प्रोफाइल को बैंक ज्यादा जोखिम भरा मान सकते हैं, जिससे कार्ड रिजेक्ट होने की संभावना बढ़ती है।

बार-बार आवेदन नुकसानदेह

कम समय में कई बैंकों से क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन करना भी नेगेटिव सिग्नल माना जाता है। बार-बार आवेदन करने से क्रेडिट प्रोफाइल प्रभावित होती है और बैंक इसे वित्तीय दबाव का संकेत मान सकते हैं।

मौजूदा लोन व ईएमआई भी देखता है बैंक

अगर किसी व्यक्ति पर पहले से कई लोन या भारी ईएमआई का बोझ है, तो बैंक नए क्रेडिट कार्ड के लिए मंजूरी देने में हिचकिचाता है। बैंक यह सुनिश्चित करना चाहता है कि ग्राहक की आय और खर्चों में संतुलन बना हुआ हो।

खाते वाले बैंक से कार्ड लेना फायदेमंद

विशेषज्ञों की सलाह है कि क्रेडिट कार्ड के लिए सबसे पहले अपने मौजूदा बैंक को प्राथमिकता दें। जिस बैंक में आपका सेविंग अकाउंट है, वह आपके ट्रांजैक्शन पैटर्न और फाइनेंशियल बिहेवियर को बेहतर तरीके से समझता है, जिससे अप्रूवल के चांस बढ़ जाते हैं।

कम क्रेडिट कार्ड, ज्यादा भरोसेमंद प्रोफाइल

- अंत में विशेषज्ञों का कहना है कि एक व्यक्ति को एक या दो क्रेडिट कार्ड तक ही सीमित रहना चाहिए।
- ज्यादा क्रेडिट कार्ड होने पर बैंक आपके प्रोफाइल को जोखिम भरा मान सकता है, जिससे नए आवेदन रिजेक्ट होने की आशंका बढ़ जाती है।

क्या है सिबिल स्कोर

सिबिल स्कोर एक 3-डिजिट का नंबर होता है जो आपकी क्रेडिट हिस्ट्री को दर्शाता है। यह नंबर 300 से 900 के बीच होता है, और यह आपकी क्रेडिटवर्थीनेस को मापता है। सिबिल स्कोर आपके लायन, क्रेडिट कार्ड, और अन्य क्रेडिट प्रोडक्ट्स के भुगतान इतिहास, क्रेडिट उपयोग, और अन्य कारकों के आधार पर गणना किया जाता है।

सिबिल स्कोर के फायदे

- लायन और क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन करने में मदद करता है
- कम ब्याज दर पर लायन प्राप्त करने में मदद करता है
- क्रेडिटवर्थीनेस को बढ़ाता है
- वित्तीय योजना बनाने में मदद करता है

सिबिल स्कोर को कैसे बढ़ाएं

- समय पर भुगतान करें
- क्रेडिट उपयोग को कम रखें
- क्रेडिट रिपोर्ट में गलतियों को सुधारें
- नए क्रेडिट अकाउंट न खोलें
- क्रेडिट हिस्ट्री को लंबा रखें

निवेशक सोने और चांदी की तरफ कर रहे रुख, पोर्टफोलियो में बनाएं विविधता

अस्थिरता के दौर में गोल्ड या सिल्वर ईटीएफ?

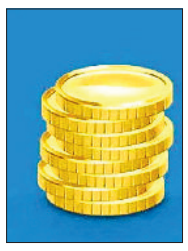

निवेश मंत्रा | बिजनेस डेस्क

पोर्टफोलियो में थोड़ी मात्रा में चांदी जोड़कर विविधता लाएं

सोना और चांदी दोनों की कीमतें डॉलर में तय होती हैं, इसलिए उनकी वैल्यू डॉलर की मजबूती पर निर्भर करती है। मजबूत डॉलर धातुओं को अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के लिए महंगा कर देता है, जिससे मांग घट सकती है, जबकि कमजोर डॉलर का प्रभाव उलटा होता है। हालांकि कुछ मैक्रो परिस्थितियों जैसे उच्च मुद्रास्फीति के समय, डॉलर और सोना दोनों एक साथ भी बढ़ सकते हैं।

अमेरिका–वेनेजुएला संघर्ष और बढ़ती भू-राजनीतिक अनिश्चितता के बीच, निवेशक तेजी से सोना और चांदी जैसे पारंपरिक सुरक्षित निवेश विकल्पों की ओर रुख कर रहे हैं। म्यूचुअल फंड निवेशकों के लिए मुख्य सवाल अब यह है कि क्या उन्हें गोल्ड ईटीएफ, सिल्वर ईटीएफ या दोनों का मिश्रण चुनना चाहिए? बाजार विशेषज्ञों का कहना है कि मौजूदा भू-राजनीतिक तनाव के दौरान पोर्टफोलियो में गोल्ड ईटीएफ की भूमिका अधिक होनी चाहिए। क्योंकि सोना अधिक स्थिरता प्रदान करता है और एक भरोसेमंद हेज का काम करता है। सिल्वर ईटीएफ को कम अनुपात में रखा जा सकता है क्योंकि इनमें अधिक उतार-चढ़ाव होता है और इनकी मांग काफी हद तक औद्योगिक उपयोग पर निर्भर है।

अलग-अलग भूमिका है दोनों धातुओं की

दोनों धातुएं पारंपरिक रूप से अलग-अलग भूमिकाएं निभाती हैं। पोर्टफोलियो पोजिशनिंग के दृष्टिकोण से अधिकांश निवेशकों को दोनों में संतुलित निवेश रखना चाहिए। सोना प्राथमिक सुरक्षित-निवेश एंकर बना रहना चाहिए, जबकि चांदी पूरक भूमिका निभाते हुए कुछ चरणों में अधिक रिटर्न दे सकती है। निवेशक यह कभी न भूलें कि कोई भी एसेट क्लास हर समय नहीं जीतता। इसलिए इक्विटी और डेट सहित मल्टी-एसेट पोर्टफोलियो बनाना जरूरी है।

मौजूदा समय में पोर्टफोलियो में गोल्ड ईटीएफ की भूमिका अधिक होनी चाहिए

■

सोना अधिक स्थिरता प्रदान करता है और एक भरोसेमंद हेज का काम करता है

■

निवेशक ध्यान रखें कोई भी एसेट क्लास हर समय नहीं जीतता

नए निवेशक क्या करें?

इस सप्ताह सोना और चांदी मजबूत बढ़त के साथ खुले और बढ़ते भू-राजनीतिक तनावों के बीच एक सप्ताह के उच्चतम स्तर पर पहुंच गए। अनिश्चितता के इस दौर में यह सवाल भी उभरता है कि पहली बार निवेश करने वालों के लिए फोकस कहां होना चाहिए? ऐतिहासिक रूप से भू-राजनीतिक तनाव के समय सोना मजबूत सुरक्षित-निवेश माना गया है और केंद्रीय बैंकों की अधिक भागीदारी, व्यापक वैश्विक स्वीकार्यता और गहरी लिक्विडिटी के कारण सोना आमतौर पर संकट के समय बेहतर प्रदर्शन करता है। पहली बार निवेश करने वालों को सोने के ईटीएफ में मुख्य सुरक्षित-निवेश करना चाहिए, लेकिन पोर्टफोलियो में थोड़ी मात्रा में चांदी भी जोड़कर विविधता लाई जा सकती है।

मुद्रा विनिमय दर का भी होता है असर

मुद्रा विनिमय दरों का उतार-चढ़ाव भी सोना और चांदी ईटीएफ से मिलने वाले रिटर्न को प्रभावित करता है। सोना एक कीमती धातु के रूप में, आम तौर पर डॉलर और ब्याज दरों में बदलाव के प्रति अधिक संवेदनशील होता है, जबकि चांदी मुद्रा उतार-चढ़ाव के अलावा वैश्विक वृद्धि की उम्मीदों पर भी प्रतिक्रिया करती है। अमेरिका–वेनेजुएला संघर्ष ने तेल की कीमतों और मुद्रास्फीति को लेकर चिंताएं भी बढ़ा दी हैं। बढ़ती तेल कीमतें मुद्रास्फीति को ऊपर धकेल सकती हैं, जिससे आम तौर पर कीमती धातुओं को समर्थन मिलता है क्योंकि निवेशक बढ़ती लागत के खिलाफ हेज की तलाश करते हैं।

डॉलर की कीमत कैसे करेगी प्रभावित?

वेनेजुएला ऑपरेशन के बाद दिए गए बयान में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि अब हम वेनेजुएला को चलाने जा रहे हैं। ट्रंप ने यह भी कहा कि अमेरिका अन्य देशों को वेनेजुएला का काफी तेल बेचेगा। इन हालात में निवेशकों के लिए महत्वपूर्ण सवाल यह भी है कि डॉलर की मजबूती और मुद्रा-विनिमय उतार-चढ़ाव सोना और चांदी की कीमतों को कैसे प्रभावित करते हैं? असल में सोना और चांदी दोनों ही आम तौर पर डॉलर के विपरीत दिशा में चलते हैं। मजबूत डॉलर कीमतों पर दबाव डालता है, जबकि कमजोर डॉलर उन्हें सपोर्ट करता है। सोना मुद्रा और ब्याज-दर के उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक संवेदनशील है, जबकि चांदी पर आर्थिक और औद्योगिक गतिविधि का भी प्रभाव होता है। सोना और चांदी दोनों की कीमतें डॉलर में तय होती हैं, इसलिए उनकी वैल्यू डॉलर की मजबूती पर निर्भर करती है। मजबूत डॉलर धातुओं को अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के लिए महंगा कर देता है, जिससे मांग घट सकती है, जबकि कमजोर डॉलर का प्रभाव उलटा होता है। हालांकि कुछ मैक्रो परिस्थितियों जैसे उच्च मुद्रास्फीति के समय, डॉलर और सोना दोनों एक साथ भी बढ़ सकते हैं। इसके अलावा, चांदी के औद्योगिक उपयोग के कारण कमजोर डॉलर अक्सर इस कीमती धातु में तेज बढ़त को ट्रिगर करता है क्योंकि विदेशी विनिर्माण मांग बढ़ जाती है।

आक्रामक रणनीति नहीं रीबैलेंसिंग करें

एक सवाल यह भी है कि निवेशकों के लिए मौजूदा परिस्थिति में क्या यह समय एक्सपोजर बढ़ाने का है या सिर्फ मौजूदा गोल्ड और सिल्वर ईटीएफ पोर्टफोलियो को रीबैलेंस करने का? दूसरी बात क्या बढ़ती मुद्रास्फीति या तेल कीमतें गोल्ड बनाम सिल्वर के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकती हैं? ऐसे में मल्टी-एसेट पोर्टफोलियो बनाना जरूरी है, क्योंकि कोई भी एसेट हमेशा नहीं जीतता। इसके बावजूद मौजूदा परिस्थितियों को देखते हुए कीमती धातुएं अब भी पोर्टफोलियो की सुरक्षा और विविधता के लिए आकर्षक विकल्प हैं। साथ ही निवेशक आक्रामक रूप से एक्सपोजर बढ़ाने के बजाय मौजूदा होल्डिंग्स को रीबैलेंस करें और बढ़ती मुद्रास्फीति और तेल कीमतें आम तौर पर सोने को समर्थन देती ही हैं।

नए साल में करें नई शुरुआत कुछ बातों पर रखें फोकस शेयर बाजार और म्यूचुअल फंड तेजी से लोकप्रिय हो रहे

निवेश, बचत और वेल्थ बनाने के लिए तैयार करें बेहतर रणनीति

जानकारी | बिजनेस डेस्क

आज के समय में स्वास्थ्य का खर्च इतना ज्यादा हो गया है कि अगर आपको या परिवार के किसी सदस्य को अस्पताल में भर्ती होना पड़ जाए तो आपकी अच्छी खासी बचाई गई रकम इलाज और अस्पताल का बिल भरने में खर्च हो सकती है। इससे आपके निवेश की योजना और निवेश के लक्ष्यों के लिए कदम आगे बढ़ा पाना बेहद मुश्किल हो जाएगा।

नए साल पर सभी कुछ न कुछ संकल्प लेते हैं। इसलिए निवेश के क्षेत्र में भी यह समय कुछ न कुछ बेहतर रणनीति बनाने का है। नया साल 2026 शुरू हो गया है। कमाई, बचत और निवेश को लेकर भी नए साल में कुछ न कुछ रिजॉल्यूशन जरूर लें। नए निवेशक जहां नई शुरुआत के लिए विकल्प और तरीकों पर बात करेंगे, वहीं जो लोग पहले से निवेश कर रहे हैं, वो कुछ न कुछ बदलाव या डायवर्सिफिकेशन के बारे में सोच रहे होंगे। हर कोई अपनी-अपनी समझ और तरीकों से अपनी फाइनेंशल प्लानिंग बनाता और उस पर आगे बढ़ता है। निवेश के तेजी से उभरते विकल्पों की बात करें तो शेयर बाजार और म्यूचुअल फंड तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। नए साल की नई शुरुआत के बीच एक्सपर्ट के नजरिए से समझते हैं कि निवेशक को 2026 में किन बातों पर फोकस करना चाहिए, जिससे कि कमाई, बचत और निवेश का संतुलन बना रहे, वेल्थ बनता रहे और फाइनेंशियल लक्ष्यों को हासिल करना आसान रहे।

जीवन बीमा व स्वास्थ्य बीमा लिया है?

निवेश की शुरुआत करने से पहले यह सुनिश्चित कर लेना बेहद जरूरी है कि क्या आपने पर्याप्त जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा कवर लिया है या नहीं? अगर नहीं है या पर्याप्त नहीं है, तो 2026 में सबसे पहले आप ये दोनों कवर जरूर करा लें। जीवन बीमा आपके परिवार और आप पर निर्भर लोगों को उस समय आर्थिक मदद करता है, जब कोई अनहोनी होती है। इसी तरह, पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा भी रखना जरूरी है।

क्या फाइनेंशियल लक्ष्यों की समीक्षा की

नए साल में सबसे अहम बात कि अपने फाइनेंशियल लक्ष्यों की समीक्षा करें। ऐसा इसलिए जरूरी है कि हर साल बाजार में उठापटक, रिस्क प्रोफाइल, इनकम और खर्चों में उतार-चढ़ाव है। ऐसे में इस बात का आकलन करना अहम हो जाता कि क्या आपने निवेश के जिन एसेट क्लास में पैसा लगाया है, उनकी परफार्मेंस कैसी चल रही है, जोखिम उठाने की क्षमता कम-ज्यादा हुई है या फिर आपके फाइनेंशियल लक्ष्य हासिल करने को लेकर कैसा संकेत है?

मार्केट साइकिल समझना क्यों जरूरी?

नए साल के साथ हमेशा यह भी ध्यान रखना चाहिए कि बाजार में निवेश का साइकिल कैसा भी हो आपको धैर्य रखना चाहिए। मार्केट साइकिल में उतार-चढ़ाव आना स्वाभाविक बात है। कभी बाजार तेजी में होता है तो कभी मंदी में, लेकिन ऐसे समय में निवेश बनाए रखना सबसे जरूरी होता है। घबराकर निवेश निकालने से नुकसान होने की आशंका बढ़ जाती है।

धैर्य रखें, लाभ जरूर मिलेगा

ऐसे में अगर पर धैर्य रखते हैं और लंबे समय तक निवेश में बने रहते हैं, उन्हें बाजार के पूरे साइकिल का लाभ भी आपको मिलेगा। नियमित निवेश, जैसे एसआईपी, बाजार की गिरावट में भी औसत लागत कम करने में मदद करता है। मार्केट साइकिल का इतिहास बताता है कि यह समय के साथ संभलता है और नया हाई बनाता है। इसलिए शॉर्ट टर्म उतार-चढ़ाव में पैनिक होने की बजाय लंबी अवधि के लक्ष्यों को हासिल करने पर फोकस करना चहिए।

एसआईपी शुरू करें या निवेश बढ़ाएं

कहा जाता है कि नई शुरुआत करने से ही नए मौके बनते हैं। इसलिए अगर म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहते हैं, तो सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए निवेश शुरू कर सकते हैं। वहीं अगर पहले से निवेश कर रहे हैं तो एसआईपी की राशि बढ़ा सकते हैं। एसआईपी शुरू करना या मौजूदा निवेश को बढ़ाना दोनों ही समझदारी भरे फैसले हो सकते हैं। एसआईपी के जरिए नियमित निवेश करने से बाजार की गिरावट का फायदा मिलता है और औसत लागत कम होती है। वहीं, जिन निवेशकों की कमाई स्थिर है और वे अपने लक्ष्यों को लेकर स्पष्ट हैं, वे अपने निवेश की राशि बढ़ाकर लंबे समय में बेहतर रिटर्न पा सकते हैं। निवेश हमेशा जोखिम उठाने की क्षमता और समय सीमा के अनुसार करना जरूरी है।

लोन चुकाने के लिए न निकालें ईपीएफ से पैसा हो सकता है नुकसान

बिजनेस डेस्क

बिजनेस डेस्क। कई सैलरीड लोगों के लिए ईपीएफ (कर्मचारी भविष्य निधि) की बचत से लोन चुकाना बहुत लुभावना लगता है। लोग सोचते हैं कि इससे बड़ा लोन खत्म, हर महीने का तनाव कम और जीवन कर्जमुक्त हो जाता है। लेकिन पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट चेतावनी देते हैं कि खासकर होम लोन चुकाने के लिए ईपीएफ की रकम निकालना लंबे समय में काफी महंगा पड़ सकता है, जिसे ज्यादातर लोग नजरअंदाज कर देते हैं।

ईपीएफ है रिटायरमेंट का सहारा

ईपीएफ को रिटायरमेंट के लिए बनाया गया है। ये एक मजबूरी वाला लंबे समय का निवेश है। कर्मचारी और कंपनी दोनों की तरफ से पैसा जाता है और सालाना करीब 8.25 प्रतिशत ब्याज मिलता है, वो भी कंपाउंडिंग के साथ। सबसे खास बात यह है कि ब्याज टैक्स-फ्री है। इसलिए ये सैलरीड लोगों के लिए सबसे अच्छा और कम रिस्क वाला तरीका है पैसा बढ़ाने का। ईपीएफओ (कर्मचारी भविष्य निधि संगठन) के नियमों के मुताबिक, ईपीएफ से निकासी बहुत सीमित है ताकि रिटायरमेंट का पैसा सुरक्षित रहे। आम लोन जैसे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड का बिल चुकाने के लिए ईपीएफ से पैसा नहीं निकाल सकते। सिर्फ हाउसिंग लोन चुकाने के लिए ही कुछ खास शर्तों के साथ निकासी की इजाजत है, जैसा कि ईपीएफ स्कीम, 1952 में लिखा है।

होम लोन समय के साथ हल्का क्यों लगता है

होम लोन के मामले में समय के साथ बोझ कम होता जाता है। ईएमआई चलते-चलते ब्याज का हिस्सा घटता है और मूल रकम का हिस्सा बढ़ता है। साथ ही, आमतौर पर सैलरी बढ़ती है, इन्फ्लेशन के साथ करियर आगे बढ़ता है, तो ईएमआई का बोझ रिलेटिव तरीके से कम लगने लगता है। टैक्स का भी फायदा है। पुराने टैक्स रिजीम में प्रिंसिपल और ब्याज दोनों पर छूट मिलती है, जिससे लोन की असली लागत कम हो जाती है। नए टैक्स रिजीम में ये फायदा नहीं है, लेकिन एक्सपर्ट कहते हैं कि ईपीएफ का लंबे समय तक कंपाउंडिंग इतना मजबूत है कि वो लोन जल्दी चुकाने से मिलने वाली बचत से ज्यादा फायदा देता है।

ब्याज दर का जाल

पहली नजर में आंकड़े थोड़े भ्रमित कर सकते हैं। अभी होम लोन की दरें करीब 7-7.5 प्रतिशत के आसपास हैं, जो ईपीएफ के 8.25 प्रतिशत से थोड़ी कम लगती हैं। फर्क छोटा-सा दिखता है। लेकिन ईपीएफ का ब्याज टैक्स-फ्री है, तो 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब वाले के लिए ये 8.25 प्रतिशत करीब 11 प्रतिशत के बराबर टैक्सेबल रिटर्न देता है। इतना पोस्ट-टैक्स रिटर्न बहुत कम सुरक्षित निवेश देते हैं।

कब ईपीएफ निकालना सही

ईपीएफओ के नियमों के अनुसार, हाउसिंग लोन चुकाने के लिए ईपीएफ से पैसा सिर्फ एक बार जीवन में निकाला जा सकता है। इसके लिए कुछ शर्तें हैं, जैसे कम से कम 10 साल की सदस्यता, निकासी की सीमा वेतन, बैलेंस या बकाया लोन से जुड़ी होती है। पैसा सीधे लेंडर को जाता है। एक्सपर्ट कहते हैं कि ईपीएफ निकालना सिर्फ कुछ खास स्थितियों में सोचना चाहिए, जैसे: रिटायरमेंट के करीब पहुंच चुके हों और ईपीएफ में काफी ज्यादा बचत हो। बहुत ज्यादा कैश-फ्लो का दबाव हो और कोई दूसरा रास्ता न बचा हो। लोन की बाकी रकम कुल रिटायरमेंट कोष के मुकाबले बहुत छोटी हो। ऐसे मामलों में भी पहले अच्छे से कैलकुलेशन करना और किसी प्रोफेशनल से सलाह लेना बहुत जरूरी है।

इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश 6% घटा, पर फ्लेक्सी-कैप ने बनाया रिकॉर्ड

रिपोर्ट | बिजनेस डेस्क

दिसंबर में शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव का असर म्यूचुअल फंड निवेश पर भी साफ नजर आया। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया यानी एएमएफआई के ताजा आंकड़ों के मुताबिक दिसंबर में इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में निवेश 6% घटकर 28,054 करोड़ रुपये रह गया। जबकि नवंबर में यह आंकड़ा 29,911 करोड़ रुपये था। अगर साल-दर-साल के आधार पर तुलना करें, तो गिरावट और भी साफ दिखती है। दिसंबर 2024 के मुकाबले दिसंबर 2025 में इक्विटी फंड्स में निवेश 32% कम रहा। पिछले साल दिसंबर में इक्विटी फंड्स में 41,155 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था। हालांकि पूरे कैलेंडर वर्ष 2025 की बात करें, तो निवेशकों ने इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में कुल 3.03 लाख करोड़ रुपये लगाए।

फ्लेक्सी-कैप फंड्स पर निवेशकों का भरोसा बरकरार

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स की कुल 11 कैटेगरी में से 9 में दिसंबर के दौरान निवेश आया। सिर्फ डिविडेंड यील्ड फंड और ईएलएसएस फंड्स से पैसा निकला। इन सभी कैटेगरी में फ्लेक्सी-कैप फंड्स सबसे आगे रहे। इस कैटेगरी में दिसंबर के दौरान 10,019 करोड़ रुपये का नेट निवेश हुआ, जो अब तक का सबसे ऊंचा स्तर है। निवेशक में इस बात पर ज्यादा भरोसा नजर आया कि फ्लेक्सी-कैप फंड्स के मैनेजर बाजार की स्थिति के हिसाब से लार्ज, मिड और स्मॉल कैप शेयर्स में निवेश को एडजस्ट कर सकते हैं।

मिडकैप और लार्ज एंड मिडकैप फंड्स भी चर्चा में

फ्लेक्सी-कैप के बाद मिडकैप फंड्स दूसरे नंबर पर रहे। दिसंबर में इन फंड्स में 4,175 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। वहीं लार्ज एंड मिडकैप फंड्स में 4,093 करोड़ रुपये की आमद दर्ज की गई। इससे यह संकेत मिलता है कि निवेशक अभी भी ग्रोथ की संभावनाओं वाले शेयरों में रुचि बनाए हुए हैं।

सेक्टोरल और स्मॉलकैप फंड्स में गिरावट

सेक्टोरल और थीमैटिक फंड्स के लिए दिसंबर थोड़ा फीका रहा. इन फंड्स में निवेश महीने-दर-महीने आधार पर 49% घटकर 945 करोड़ रुपये रह गया। नवंबर में यह आंकड़ा 1,864 करोड़ रुपये था। स्मॉलकैप फंड्स में भी 13% की गिरावट देखने को मिली. दिसंबर में इन फंड्स में 3,823 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। बाजार की वैल्यूएशन और अस्थिरता को देखते हुए निवेशक स्मॉलकैप से थोड़ा सतर्क नजर आए।

शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव का असर म्यूचुअल फंड पर भी दिखा

ईएलएसएस और डिविडेंड यील्ड फंड्स से पैसा निकला

दिसंबर में टैक्स सेविंग ईएलएसएस फंड्स से 717 करोड़ की निकासी हुई। वहीं, डिविडेंड यील्ड फंड्स से 254 करोड़ बाहर चले गए। निवेशकों की बदली प्राथमिकताओं का असर यहां साफ दिखा।

पूरे साल 2025 में कौन सी इक्विटी कैटेगरी रही आगे

कैलेंडर वर्ष 2025 की बात करें, तो फ्लेक्सी-कैप फंड्स पूरे साल निवेशकों की पहली पसंद रहे। इस कैटेगरी में साल भर में 80,978 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद स्मॉलकैप फंड्स में 52,321 करोड़ रुपये और मिडकैप फंड्स में 49,939 करोड़ की नेट इनफ्लो दर्ज की गई।

डेट फंड्स से बड़े पैमाने पर निकाले गए पैसे

जहां इक्विटी में निवेश धीमा पड़ा, वहीं डेट म्यूचुअल फंड्स में दिसंबर के दौरान भारी निकासी देखने को मिली। इस महीने डेट फंड्स से कुल 1.32 लाख करोड़ रुपये बाहर निकल गए। नवंबर में यह निकासी 25,692 करोड़ रुपये थी। दिलचस्प बात यह है कि दिसंबर 2024 में भी डेट फंड्स से करीब 1.27 लाख करोड़ रुपये की निकासी हुई थी।

16 में से 14 डेट फंड कैटेगरी में आउटफ्लो

डेट फंड्स की 16 कैटेगरी में से सिर्फ ओवरनाइट फंड्स और फ्लोटर फंड्स में निवेश आया। बाकी 14 कैटेगरी में पैसा निकला। लिक्विड फंड्स से सबसे ज्यादा 47,307 करोड़ रुपये की निकासी हुई। इसके बाद मनी मार्केट फंड्स से 40,464 करोड़ रुपये बाहर निकले।

साल भर में डेट फंड्स का हाल

पूरे 2025 में डेट म्यूचुअल फंड्स में कुल 1.19 लाख करोड़ रुपये का नेट निवेश आया। मनी मार्केट फंड्स इस दौरान सबसे आगे रहे, जिनमें 66,993 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। वहीं गिल्ट फंड्स में पूरे साल में 5,680 करोड़ रुपये की सबसे ज्यादा निकासी दर्ज की गई।

हाइब्रिड फंड्स में निवेश भी घटा

दिसंबर में हाइब्रिड फंड्स में निवेश 19% घटकर 10,755 करोड़ रुपये रह गया। नवंबर में यह आंकड़ा 13,299 करोड़ रुपये था, जबकि दिसंबर 2024 में हाइब्रिड फंड्स में सिर्फ 4,369 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था। पूरे 2025 में हाइब्रिड फंड्स में कुल 1.56 लाख करोड़ रुपये का निवेश आया। हाइब्रिड फंड्स की 6 कैटेगरी में से कंजर्वेटिव हाइब्रिड फंड्स को छोड़कर सभी में निवेश पॉजिटिव रहा। मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड्स में दिसंबर में नेट इनफ्लो 7,425 करोड़ रुपये का हुआ। इसके बाद एग्रेसिव हाइब्रिड फंड्स में 1,513 करोड़ रुपये का निवेश आया।

पैसिव फंड्स और ईटीएफ में उछाल

इंडेक्स फंड्स और ईटीएफ जैसी दूसरी स्कीम्स में दिसंबर के दौरान निवेश में 74% की तेज बढ़ोतरी हुई। नवंबर में जहां इन फंड्स में 15,385 करोड़ रुपये आए थे, वहीं दिसंबर में यह आंकड़ा बढ़कर 26,723 करोड़ रुपये हो गया। दिसंबर 2024 में पैसिव फंड्स में कुल निवेश सिर्फ 784 करोड़ रुपये था, ऐसे में इस साल की बढ़त काफी मजबूत मानी जा रही है।

खबर संक्षेप

काहनौर में युवक ने की आत्महत्या

रोहतक। काहनौर में एक युवक ने फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक काफी समय से मानसिक तौर पर परेशान चल रहा था। पुलिस ने जांच पड़ताल शुरू कर दी है। पुलिस ने मुताबिक युवक रमेश काफी समय से मानसिक तौर पर परेशान था। इन्हीं कारणों के चलते उसने आत्महत्या कर ली।

मोटरसाइकिल से गिरने पर युवक की मौत

रोहतक। सुदंरपुर के पास हुए हादसे में एक युवक की मौत हो गई। मृतक की पहचान एशांत निवासी नेपाल के तौर पर हुई है। उसका शव सुंदरपुर माइनर के पास मिला था। वह रात को घूमने के लिए बाइक से निकला था। तभी संतुलन बिगड गया और गिरकर मौत हो गई। सदर पुलिस ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए पीजीआई भेज दिया गया है। मामले की जांच की जा रही है।

बहलबा गांव में खो-खो खेल प्रतियोगिता आज

महम। आर्यन स्पोर्ट्स क्लब बहलबा द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की पुण्य तिथि पर गांव के शहीद राजवीर सिंह खेल स्टेडियम में रविवार 11 जनवरी को खो-खो की अंडर-14 आयु वर्ग खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। स्पोर्ट्स क्लब के संरक्षक रोहतास राठी ने बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री की पुण्य तिथि पर बच्चों को जय जवान – जय किसान का महत्व बताया जाएगा। साथ ही युवाओं को खेलों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाएगा। स्पोटर्सक्लब के प्रधान अजीत सिंह ने बताया कि इस दौरान शास्त्री जी के नारे को फलीभूत करते हुए एक जवान और एक किसान को सम्मानित किया जायेगा।

आरएसएस की प्रमुख नागरिक गोष्ठी आज

महम। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा रविवार दोपहर 2 बजे कस्बा महम की स्वर्णकार धर्मशाला में प्रमुख नागरिक गोष्ठी का आयोजन किया जाएगा। एडवोकेट अशोक सिवाच ने बताया कि जिला संघ चालक देवेंद्र गोयल कार्यक्रम के संयोजक हैं। नागरिक गोष्ठी की अध्यक्षता शिवानंद धर्मार्थ औषधालय खेड़ी महम के निदेशक डॉक्टर कृष्ण कुमार लांबा करेंगे। जबकि प्रांत अभिलेखाकार प्रमुख संजय कुमार और विश्व हिंदू परिषद् के उत्तर क्षेत्र सामाजिक समरसता प्रमुख ईश्वर लाल गोष्ठी के मुख्य वक्ता होंगे।

दो उम्मीदवारों ने अपना नामांकन भरा

रोहतक। जाट शिक्षण संस्था के कॉलेजियम नंबर 30 के उपचुनाव में दो उम्मीदवारों ने अपना नामांकन भरा। पहले उम्मीदवार करमबीर तथा दूसरे उम्मीदवार ईश्वर सिंह हैं। दोनों ही बहु अकबरपुर गांव के निवासी हैं। चुनाव के रिटर्निंग ऑफिसर डॉ सितेंद्र पावड़िया ने बताया कि 11 जनवरी को नामांकन पत्रों की स्क्रुटनी की जाएगी और 12 जनवरी को नाम वापस लेने की अंतिम तिथि रहेगी। उसी दिन चुनाव चिन्ह भी अलॉट किए जाएंगे। मतदान 15 जनवरी को सुबह 10 बजे से शाम 3 बजे तक जाट कॉलेज में संपन्न होगा।

राजकीय महिला महाविद्यालय गोहाना में हर्षोल्लास से मनाया अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस

हिंदी निबंध लेखन में कमल व सपना की टीम अव्वल

प्रतिभागी छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का सराहनीय प्रदर्शन किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ गोहाना

राजकीय महिला महाविद्यालय, गोहाना में शनिवार को अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. मीनाक्षी सांगवान ने किया। इस दौरान हिंदी भाषा के महत्व पर निबंध और कहानी लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें प्रतिभागी छात्राओं ने अपनी प्रतिभा सराहनीय प्रदर्शन किया।

प्राचार्या मीनाक्षी सांगवान ने हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान और भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। उन्होंने विद्यार्थियों को हिंदी के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार हेतु सदैव सक्रिय रहने के लिए प्रेरित किया। हिंदी भाषा के ज्ञानवर्धन के लिए कार्यक्रम में हिंदी निबंध एवं कहानी लेखन प्रतियोगिता करवाई गई। प्रतियोगिता में एमए प्रथम वर्ष की छात्रा कमल और बीए तृतीय वर्ष की छात्रा सपना की टीम प्रथम रही। बीए तृतीय वर्ष की छात्रा राखी और अंशुल की टीम द्वितीय जबकि बीएससी प्रथम वर्ष की छात्रा हिमानी और बीकॉम प्रथम वर्ष की छात्रा रिया की टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. पिंकी रानी ने किया। कार्यक्रम के आयोजन में विभागीय सदस्यों अर्चना, डॉ. सुनीता एवं डॉ. एकता का विशेष सहयोग रहा।

गोहाना। विजेता छात्राओं को प्रशस्ति पत्र देते हुए प्राचार्या डॉ. मीनाक्षी सांगवान, साथ हैं डॉ. पिंकी व डॉ. एकता। फोटो : हरिभूमि

सोनीपत। कार्यक्रम के दौरान मौजूद प्रबुद्धजन। फोटो : हरिभूमि

सेक्टर 12 में विश्व हिंदी दिवस मनाया

सोनीपत। सेक्टर 12 में हिंदी प्रेमियों ने विश्व हिंदी दिवस मनाया। दिलबाग सिंह हिंदी प्राध्यापक ने बताया कि 4 अक्तूबर 1977 को भारत के तत्कालीन विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने सयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में भाषण देकर इतिहास रच दिया था। यह पहला मौका था कि जब किसी भारतीय नेता ने संयुक्त राष्ट्र संघ को हिंदी में सम्बोधित किया। विश्व में हिंदी दुनिया की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। अब तक भारत में हिंदी को राष्ट्र भाषा का दर्जा नहीं दिया गया है। भारत के संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 343 (1) में भी यह कहा गया है कि हिंदी भारत की राजभाषा होगी और लिपि देवनागरी होगी। हम सभी को हिंदी भाषा में ज्यादा से ज्यादा कार्य करना चाहिए। इस अवसर पर सेवा ट्रस्ट यूके के अध्यक्ष सुरेश वत्स, गीता हिंदी अध्यापिका, पहलवान हवा सिंह आंतिल, गणित प्रवक्ता संजय कुमार, अध्यापक सुरेंद्र कश्यप आदि उपस्थित रहे।

अनेकता में एकता की सूत्रधार है हिंदी भाषा : उषा

गोहाना। शहर के पुराना बस अड्डा स्थित सत नगर में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। समारोह में आजाद हिंद देशभक्त मोर्चा द्वारा मुख्य अतिथि एवं हिंदी अध्यापिका उषा चुघ को उनके उनके उत्कृष्ट कार्यों को लेकर सम्मानित किया गया। मार्गदर्शन मोर्चा के मुख्य संरक्षक आजाद सिंह ढांगी का रहा। अध्यक्षता मोर्चा के निदेशक डॉ. सुरेश सेतिया ने की। उषा चुघ ने कहा कि हिंदी भाषा अनेकता में एकता को स्थापित करने की सूत्रधार है। यह भारत की विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और धर्मों के लोगों को आपस में जोड़ती है जिससे विविधता के बावजूद राष्ट्र एकजुट रहता है। डॉ. सुरेश सेतिया ने कहा कि हिंदी भाषा एक सेतु का काम करती है जो प्राचीन संस्कृति और आधुनिक प्रगति को जोड़ती है। यह राष्ट्रीय चेतना का आधार है। आजाद सिंह ढांगी ने कहा कि हर देशवासी को दुनिया में हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए जागरूकता पैदा करना और हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना चाहिए। इस मौके पर सेवानिवृत्त उप प्राचार्या सुषमा सेतिया, शकुंतला दुरेजा, मंजू सचदेवा, सुदेश, भूपेंद्र सिंह, गुलाब खान, गुरचरण सिंह मक्कड़, मास्टर रमेश मेहता, सतबीर पौड़िया, हर भगवान, मदन मोहन अत्री, उधम सिंह, सुभाष शर्मा, सतपाल शर्मा, उमेद पांचाल, मनोज सैनी, लक्ष्मी व रीना कश्यप उपस्थित रहे।

गोहाना। हिंदी अध्यापिका उषा चुघ को सम्मानित करते हुए मोर्चा के प्रतिनिधि।

कबीरपुर सैनी भवन में एससी और बीसी समाज की बैठक

सोनीपत। बैठक के दौरान मौजूद समाज के लोग। फोटो : हरिभूमि

सोनीपत। कबीरपुर सैनी भवन में सोनीपत के एससी और बीसी समाज की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता राम दिया रतेवाल ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में हरियाणा योगी/जोगी समाज संगठन के प्रदेश अध्यक्ष सतपाल योगी मौजूद रहे। बैठक को संबोधित करते हुए सतपाल योगी ने कहा कि सोनीपत में एससी और बीसी समाज की यह बैठक सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि समाज अब संगठित होकर अपनी आवाज बुलंद करेगा और इस मुहिम को आगे चलकर प्रदेश स्तर तक ले जाया जाएगा। उन्होंने कहा कि समाज को अपने अधिकारों के लिए एकजुट रहकर आगे आना होगा।

■ प्रदेश स्तर पर मुहिम ले जाने और चुनाव में भागीदारी पर हुआ विचार

बैठक के आयोजक हरियाणा प्रदेश जोगी समाज के प्रदेश अध्यक्ष सुरेश जोगी ने कहा कि हरियाणा में आने वाले समय में तीन नगर निगमों के चुनाव होने जा रहे हैं। ऐसे में एससी और बीसी समाज को चाहिए कि वह अपने उम्मीदवार चुनाव मैदान में उतारे। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि सोनीपत में भी इस संगठन का उम्मीदवार चुनाव लड़ेगा और हर वार्ड में समाज के उम्मीदवार खड़े किए जाएंगे। जो उम्मीदवार समाज के हित में कार्य करेगा, उसे पूरा समर्थन दिया जाएगा। इस अवसर पर राधेश्याम मनियार, महेंद्र सैनी वकील, नरेश नैयर, जगबीर कश्यप, धर्मवीर, शेर सिंह, रामफल खटक, हंसराज बैरागी, श्री भगवान, राजबीर जोगी, सतीश, जापान दरोगा आदि मौजूद रहे।

मांगें न माने जाने पर चक्का जाम की चेतावनी

■ नगर निगम सोनीपत में ठेका सफाई कर्मचारियों का धरना पांचवें दिन भी जारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

सोनीपत नगर निगम में ठेका सफाई कर्मचारी एकता मंच से संबंधित मूल निवासी कर्मचारी कल्याण महासंघ, सहयोग बलि सेना यूनियन का धरना पांचवें दिन भी लगातार जारी रहा। धरने की अध्यक्षता उप प्रधान रविन्द्र ने की, जबकि संचालन सहसचिव युधिष्ठिर ने किया। लगातार चल रहे धरने से नगर निगम प्रशासन पर दबाव बढ़ता नजर आ रहा है। धरने को संबोधित करते हुए उप प्रधान रविन्द्र ने कहा कि निगम अधिकारियों पर आंदोलन का कोई असर दिखाई नहीं दे रहा है। अब तक हटाए गए सफाई कर्मचारियों को दोबारा नौकरी पर लेने को लेकर कोई सहमति नहीं बनी है। जिन कर्मचारियों का चार महीने का ईएसआई और ईपीएफ काटा गया है, उसे जमा कराने से महिला आदर्श कोऑपरेटिव सोसाइटी कंपनी के ठेकेदार ने जॉइंट कमिश्नर के सामने साफ इनकार कर दिया है, जिससे कर्मचारियों में भारी रोष है।

सोनीपत। नगर निगम गेट पर विरोध प्रदर्शन करते हुए सफाई कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

पूरी जिम्मेदारी शासन व प्रशासन की होगी

ठेका सफाई कर्मचारी एकता मंच यूनियन के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मुकेश कर्मा ने चेतावनी दी कि यदि शासन और प्रशासन ने उनकी मांगों को अनदेखा किया तो पूरे शहर में सफाई कार्य ठप कर चक्का जाम किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके बाद शहर में फैली गंदगी की पूरी जिम्मेदारी शासन और प्रशासन की होगी। धरने पर सचिव सावन कुमार, सोनू, रितेश, नवीन, रोशन, जितेंद्र, गुलाब, जगबीर, रामू, कश्मीरीलाल, अनीता, अंजली, पूनम, ज्योति, मंजू, अंजू सहित सैकड़ों सफाई कर्मचारी मौजूद रहे।

मासिक भोजन सेवा संस्था ने लगाया भंडारा

संस्था द्वारा वर्ष 2024 में भंडारे की सेवा शुरू की गई थी

■ संस्था द्वारा प्रत्येक महीने के दूसरे शनिवार को भंडारा लगाया जाता है

हरिभूमि न्यूज ▶▶ गोहाना

मासिक भोजन सेवा संस्था द्वारा शनिवार को शहर में बरोदा मार्ग स्थित गुढा मोड पर भंडारा लगाया गया। संस्था द्वारा प्रत्येक महीने के दूसरे शनिवार को यहां भंडारा लगाया जाता है। संस्था द्वारा वर्ष 2024 में भंडारे की सेवा शुरू की गई थी।

उसके बाद से समिति की यह सेवा लगातार जारी है। भंडारे में संस्था के प्रतिनिधि नवीन गोयल, रविंद्र गोयल, टिंकू जांगड़ा, विकास जांगड़ा, मोहित मित्तल, पीयूष मित्तल, गौतम जांगड़ा, राजेंद्र गगनेजा और राहुल गोयल ने अपनी सेवाएं दी। भंडारे में काफी लोगों ने भोजन की सेवा प्राप्त की।

गोहाना। भंडारे में भोजन ग्रहण करते हुए नागरिक। फोटो : हरिभूमि

आपाधापी के दौर में तालाबों का संरक्षण बेहद जरूरी : आजाद

■ समाजसेवी आजाद सिंह ने भी बच्चों को उनके कर्तव्य के बारे में प्रेरित किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ खरखौदा

पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खरखौदा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक शिविर में योगासन व व्यायाम किए गए। इसके अलावा जागरूकता रैली निकाली गई। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता यशपाल ने साफ-सफाई और संस्कारों के महत्व पर अपने विचार रखते हुए बताया कि कैसे हम अपने संस्कारों को छोड़ रहे हैं और पाश्चात्य संस्कृति के पीछे भाग रहे हैं। उन्होंने नशे के दुष्प्रभावों के बारे में भी जानकारी दी।

खरखौदा। जल संरक्षण का संदेश देते एनएसएस स्वयंसेवक। फोटो : हरिभूमि

स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर जोर दिया

रेडक्रॉस से जिला अधिकारी शशि मेहता ने मुख्य अतिथि के तौर पर बताया कि स्वयंसेवकों का उद्देश्य समाज में बड़ा महत्व है। किसी भी प्रकार की आपदा आने पर स्वयंसेवकों को अपने कर्तव्य का निर्वहन करना चाहिए। समाजसेवी आजाद सिंह ने भी बच्चों को उनके कर्तव्य के बारे में प्रेरित किया। उन्होंने स्वयंसेवकों को तालाबों के महत्व और प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग के महत्व पर जोर दिया। स्वयंसेवकों ने स्वच्छता पर रैली निकालकर लोगों को संदेश दिया।

रोडवेज की टक्कर से वरना कार में लगी आग, बेटे की मौत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

सोनीपत रोड स्थित पाकस्मा में तेज रफ्तार बस ने ब्लैक वरना कार में सामने से टक्कर मार दी। कार में सवार फाइनेंसर की मौके पर ही मौत हो गई। टक्कर इतनी भयंकर थी कि कार का अगला हिस्सा पूरी तरह से पिचक गया और छत टूटकर दूर जा गिरी। कार में आग भी लग गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और कार्रवाई की। एयरबैग ड्राइवर की छाती से चिपके हुए थे। कार की खिड़कियां काटकर उसे बाहर निकाला गया।

जानकारी के अनुसार, शनिवार दोपहर हरियाणा रोडवेज की बस और वरना कार की आमने-सामने की टक्कर हुई। टक्कर लगने के बाद रोडवेज बस कई मीटर तक कार को धकेलते हुए चली गई। एक्सीडेंट में कार के साथ बस का अगला हिस्सा भी पूरी तरह से डैमेज हो गया।

टक्कर लगते ही युवक का सिर स्टीयरिंग पर जा लगा। एयरबैग खुलकर उसकी छाती से चिपक गए। टक्कर इतनी भयंकर थी कि कार का आगे हिस्सा कई फीट तक पीछे चला गया। ड्राइवर सीट भी टूटकर अलग हो गई। इससे फाइनेंसर हिमांशु के सिर में भी गंभीर चोटें लगी। टक्कर लगने के कुछ ही देर बाद कार में आग लग गई। हांलाकि इससे पहले ही लोगों ने हिमांशु को बाहर निकाल लिया था। लोगों का कहना है कि टक्कर लगने के बाद कार की वायरिंग से चिंगारी उठने लगी थी, इससे ही कार में आग लगी।

सूचना पाकर आईएमटी थाना पुलिस मौके पर पहुंची और लोगों की मदद से हिमांशु को बाहर निकाला। हिमांशु को अस्पताल में भर्ती कराया गया। चिकित्सकों का कहना है कि एक्सीडेंट के समय ही युवक ने दम तोड़ दिया था।

परेशानी तकनीकी खामियों के चलते विभाग ने मशीनें सुधार के लिए मुख्यालय भेजी

ई-टिकट सिस्टम की खामी से बिगड़ा सफर बीपीएल यात्रियों पर सबसे ज्यादा असर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

रोडवेज डिपो में प्रयोग की जा रही ई-टिकट मशीनों की लगातार खराबी यात्रियों और कर्मचारियों दोनों के लिए परेशानी का कारण बनती जा रही है। डिपो की लगभग 50 ई-टिकट मशीनों में तकनीकी खामियां सामने आई हैं, जिनके कारण बसों में ऑनलाइन टिकटिंग व्यवस्था प्रभावित हो रही है। खराब मशीनों को सुधार के लिए मुख्यालय भेजा गया है, लेकिन वहां से इनके ठीक होकर लौटने में काफी समय लग रहा है।ई-टिकट मशीनों के खराब होने से रोडवेज बसों में यात्रियों को ऑनलाइन टिकट की सुविधा नहीं मिल पा रही है। कंडक्टरों को मैनुअल तरीके से टिकट जारी करने पड़ रहे हैं, जिससे समय भी अधिक लग रहा है और यात्रियों को असुविधा हो रही है। खासकर भीड़भाड़ वाले रूटों पर इसका असर ज्यादा देखने को मिल रहा है। इस समस्या से सबसे अधिक परेशानी उन यात्रियों को हो रही है, जो सरकार की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत निशुल्क या रियायती यात्रा का लाभ लेते हैं। हरियाणा सरकार ने बीपीएल परिवारों के सदस्यों को एक हजार किलोमीटर तक मुफ्त यात्रा के लिए विशेष कार्ड जारी कर रखे हैं। इन कार्डधारकों के लिए ई-टिकट मशीन के माध्यम से ही टिकट जारी किया जाता है। मशीनें खराब होने के कारण ऐसे यात्रियों को टिकट मिलने में दिक्कत आ रही है और कई बार उन्हें बिना टिकट यात्रा करने या फिर निजी साधनों का सहारा लेने को मजबूर होना पड़ रहा है।

वैकल्पिक व्यवस्था की जाए

अन्य मशीनों में भी समस्या चल रही कर्मचारियों का कहना है कि मशीनों की संख्या कम होने से शेष चालू मशीनों पर अतिरिक्त दबाव बढ़ गया है, जिससे उनके भी खराब होने की आशंका बनी रहती है। वहीं यात्रियों ने मांग की है कि ई-टिकट मशीनों की मरम्मत में तेजी लाई जाए और वैकल्पिक व्यवस्था की जाए, ताकि उन्हें परेशान न होना पड़े।

जल्द ही ठीक होकर आएंगी

मशीनों में बहुत बार समस्याएं आ ही जाती है, लेकिन समय पर उनको ठीक करवा लिया जाता है। उसके बाद वह आराम से काम करती है। लेकिन जल्द ही यह मशीने भी ठीक होकर आएंगी और निरंतर काम करती रहेगी। हालांकि वैकल्पिक व्यवस्था से काम करवाया जा रहा है। यात्रियों को परेशान नहीं किया जा रहा है।
हंसराज सिंह, संस्थान प्रबंधक,रोडवेज डिपो

नाबालिग के अपहरण की सूचना से मचा हड़कंप, घंटों सीसीटीवी खंगालती रही पुलिस

रोहतक। नेहरू कॉलोनी से एक नाबालिग छात्रा के कथित अपहरण की सूचना से पुलिस में हड़कंप मच गया। सूचना मिलते ही पुलिस हरकत में आ गई और कई घंटों तक इलाके के सीसीटीवी फुटेज खंगाले गए। हालांकि, शाम को राहत की खबर सामने आई जब बच्ची टोहाना में सुरक्षित मिल गई। सिटी थाना क्षेत्र की नेहरू कॉलोनी निवासी 8वीं कक्षा की छात्रा बुधवार सुबह करीब 11:30 बजे निजी स्कूल में ट्यूशन जाने के लिए घर से निकली थी। काफी देर तक घर वापस न लौटने पर परिजनों ने पुलिस को उसके अपहरण की सूचना दी। परिजनों को शक था कि बच्ची का अपहरण एक कार में सवार दो युवकों ने किया है। इस आशंका के चलते पुलिस ने गौकर्ण तीर्थ के पास स्थित अंबेडकर भवन समेत आसपास के क्षेत्रों में लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच की। संदिग्ध वाहन के नंबर के आधार पर उसके मालिक से भी पूछताछ की गई, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला।छात्रा कांग्रेस नेता की भतीजी है। बच्ची के अचानक लापता होने से परिवार में चिंता का माहौल बन गया। जांच के दौरान परिजनों को टोहाना से एक परिचित का फोन आया, जिसने बताया कि छात्रा बस में बैठकर टोहाना पहुंच गई है। उन्होंने बताया कि छात्रा के पास बस टिकट के पैसे नहीं थे, जिससे कंडक्टर को शक हुआ। पूछताछ के बाद कंडक्टर ने बच्ची को टोहाना में एक परिचित के सुपुर्द कर दिया।

खबर संक्षेप

मोबाइल हैक कर पांच लाख रुपये की धोखाधड़ी

सोनीपत। साइबर ठगी के मामले लगातार सामने आ रहे हैं और लोगों की गाढ़ी कमाई ठगे जा रहे हैं। साइबर ठगों ने गांव गंगाना निवासी अनिल कुमार के व्हाट्सएप पर लिंक भेजकर मोबाइल हैक कर लिया। उसके बाद भारतीय स्टेट बैंक, गोहाना शाखा में स्थित उनके खाते से 5.03 लाख रुपये की धोखाधड़ी कर ली। पीड़ित अनिल कुमार ने साइबर थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है कि 3 जनवरी को उनके मोबाइल पर एक व्हाट्सएप नंबर से लिंक आया। लिंक पर क्लिक करते ही उनका मोबाइल हैक हो गया। इसके बाद उनके एसबीआई खाता से दो फर्जी ट्रांजैक्शन कर कुल 5,03,158 रुपये निकाल लिए गए।

निर्माणाधीन बिल्डिंग से 12 टन सरिया चोरी

सोनीपत। गांव माच्छरी के पास से करीब 12 टन सरिया चोरी कर लिया गया। प्रॉपर्टी डीलर ने एफआईआर दर्ज कराई है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है। शिकायत के अनुसार सोनीपत-गोहाना रोड पर माच्छरी के पास स्थित नीलकंठ ढाबा के सामने अग्रवाल प्रॉपर्टी के नाम से निर्माणाधीन बिल्डिंग के लिए प्लॉट में करीब 12 टन सरिया रखा था। 7 जनवरी की रात करीब 3 बजे यह चोरी कर लिया गया। इस संबंध में दिल्ली के सेक्टर-24 रोहिणी निवासी राजबीर जैन ने मोहाना थाना में शिकायत दी है। राजबीर ने बताया कि साइट से किसी ने सरिया चोरी कर लिया।

ग्रामीण इलाकों में छाया कोहरा, दिन में धूप ने दिलाई राहत

2.9 डिग्री के साथ सोनीपत रहा प्रदेश में तीसरा सबसे ठंडा शहर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

सोनीपत जिले में मौसम लगातार परिवर्तनशील बना हुआ है और शनिवार को शीतलहर व कोहरे की दोहरी मार ने जनजीवन को प्रभावित किया। सुबह की शुरुआत शहर में हल्के और ग्रामीण क्षेत्रों में घने कोहरे के साथ हुई। कोहरे के कारण दृश्यता काफी कम रही, जिससे खासकर सुबह के समय सड़कों पर यातायात प्रभावित हुआ। हाईवे, बाईपास और ग्रामीण संपर्क मार्गों पर वाहन चालकों को धीमी गति से चलना पड़ा। शनिवार सुबह शहरी क्षेत्रों में हल्का कोहरा देखने को मिला, जो करीब आठ बजे तक साफ हो गया, जबकि ग्रामीण इलाकों में घना कोहरा देर तक बना रहा। खेतों और खुले क्षेत्रों में दृश्यता बेहद कम होने के कारण ग्रामीणों को दैनिक कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ा। कई स्थानों पर दृश्यता 50 से 100 मीटर तक सिमट गई, जिससे वाहन चालकों को हेडलाइट और फॉग लाइट का सहारा लेना पड़ा। हालांकि शीतलहर के कारण चल रही ठंडी हवा के चलते धीरे-धीरे कोहरा छंटता चला गया। ग्रामीण क्षेत्रों में कोहरा सुबह करीब दस बजे तक बना रहा। कोहरा छंटने के बाद शहर में करीब दस बजे सूर्य के दर्शन हुए, लेकिन धूप में वह तीखापन नहीं था, जो ठंड से राहत दे सके। दिनभर ठंडी हवा चलती रही, जिससे तापमान का असर और अधिक महसूस किया गया। मौसम विभाग के अनुसार दिनभर करीब 10 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से ठंडी हवा चलती रही। इस ठंडी हवा ने लोगों को घरों में दुबके रहने पर मजबूर कर दिया। सुबह और शाम के समय ठंड का असर सबसे अधिक देखने को मिला।

शीतलहर और कोहरे का डबल अटैक

तापमान सामान्य से काफी नीचे

सोनीपत के सरगथल क्षेत्र में न्यूनतम तापमान 2.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो प्रदेश में तीसरे सबसे कम तापमान में शामिल रहा। यह तापमान सामान्य से काफी नीचे रहा, जिससे ठंड ने लोगों की दिनचर्या प्रभावित कर दी। लोग अलाव, हीटर और गर्म कपड़ों का सहारा लेते नजर आए।

सर्दी, खांसी और जुखाम के मरीज बढ़े

मौसम के इस बदलाव का असर स्वास्थ्य पर भी साफ दिखाई देने लगा है। अस्पतालों और क्लीनिकों में सर्दी, खांसी, बुखार और सांस संबंधी समस्याओं से पीड़ित मरीजों की संख्या बढ़ रही है। चिकित्सकों का कहना है कि बदलते मौसम में लापरवाही स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक हो सकती है। विशेष रूप से बुजुर्गों और बच्चों को सुबह-शाम बाहर निकलने से बचने की सलाह दी जा रही है।

अभी शीतलहर बने रहने की संभावना

अगले कुछ दिनों तक सुबह के समय कोहरा और शीतलहर बने रहने की संभावना है। उत्तर-पश्चिमी ठंडी हवाओं के चलते रात के तापमान में और गिरावट दर्ज की जा सकती है।

-डॉ. प्रेमदीप, वैज्ञानिक, केवीके, जगदीशपुर।

ट्रेनों की रफ्तार धीमी, ऊंचाहार 7 मालवा एक्सप्रेस पांच घंटे लेट

कोहरे के अलावा पंजाब व गाजियाबाद में इंटरलॉकिंग कार्यों के चलते देरी से हो रहा परिचालन

एक्सप्रेस ट्रेनों को पासिंग देने के लिए बीच के स्टेशनों पर खड़ी कर दी जाती हैं सवारी गाड़ियां

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

दिल्ली-अंबाला रूट पर कोहरे और पंजाब व गाजियाबाद में इंटरलॉकिंग कार्यों के चलते ट्रेनों की रफ्तार धीमी है। दर्जनभर एक्सप्रेस ट्रेनों का शनिवार को परिचालन निर्धारित समय के बजाय 7 घंटे तक की देरी से हुआ। लंबी दूरी की एक्सप्रेस, सुपरफास्ट ट्रेनों के देरी से आने के कारण सवारी गाड़ियों का परिचालन भी प्रभावित हो रहा है। ऐसे में यात्रियों को परेशानी झेलनी पड़ रही है। फिरोजपुर मंडल के अमृतसर, दिल्ली मंडल के गाजियाबाद यार्ड में इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग कार्य को लेकर अप-डाउन लाइन की एक्सप्रेस ट्रेनें शनिवार को 7 घंटे तक की देरी से सोनीपत पहुंची। यात्री मोहन, गौरव, आशु, प्रमोद, सुरेंद्र ने बताया कि ठंड के चलते एक्सप्रेस ट्रेनों का परिचालन प्रभावित हो रहा है।

अपलाइन की प्रभावित ट्रेनें

दिल्ली-अंबाला रूट पर चलने वाली ऊंचाहार एक्सप्रेस 7:04 घंटे, मालवा एक्सप्रेस 5:04 घंटे, झेलम एक्सप्रेस 4:37 घंटे, आम्रपाली एक्सप्रेस 4:41 घंटे, गीता जयंती एक्सप्रेस 3:42 घंटे, दादर एक्सप्रेस 2 घंटे, पश्चिम एक्सप्रेस 1:11 घंटे, अमृतसर इंटरसिटी एक्सप्रेस 2:02 घंटे देरी से पहुंची।

डाउन लाइन की प्रभावित ट्रेनें

अंबाला-दिल्ली रूट पर चलने वाली बठिंडा एक्सप्रेस 4:22 घंटे, नई दिल्ली जनशताब्दी एक्सप्रेस 3:05 घंटे, गीता जयंती एक्सप्रेस 1:06 घंटे, झेलम एक्सप्रेस 1:53 घंटे, नेताजी एक्सप्रेस 2:28 घंटे, 64454 सवारी गाड़ी 3:04 घंटे, 64464 सवारी गाड़ी 1:28 घंटे, 64536 सवारी गाड़ी 1:09 घंटे की देरी से सोनीपत पहुंची।

क्राइम यूनिट वेस्ट की कार्रवाई, न्यायालय के आदेश पर तीन दिन के पुलिस रिमांड पर लिया

अवैध शराब तस्करी मामले में दो गिरफ्तार

22 दिसंबर को गोहाना रोड बाईपास पर पकड़ी गई थी शराब

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

क्राइम यूनिट वेस्ट सोनीपत की पुलिस टीम ने अवैध शराब तस्करी की एक पूर्व घटना में संलिप्त दो और आरोपितों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपितों की पहचान सरताज निवासी जालंधर, पंजाब और हरपाल निवासी होशियारपुर, पंजाब के रूप में हुई है। दोनों को न्यायालय में पेश कर आदेशानुसार तीन दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है। पुलिस के अनुसार यह मामला 22 दिसंबर 2025 का है, जब क्राइम यूनिट वेस्ट में तैनात सहायक उप निरीक्षक विजयश्वर अपनी टीम के साथ गोहाना रोड बाईपास पर गश्त पर थे। इसी दौरान गुप्त सूचना मिली कि पानीपत की ओर से एक 14 टायरी ट्रक में अवैध शराब भरकर दिल्ली की ओर ले जाई जा रही है। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने भिगान टोल के पास मन्नत हवेली के सामने नाकाबंदी कर निगरानी शुरू की। शाम करीब साढ़े पांच बजे ट्रक को रोका गया। चालक की पहचान दीपक उर्फ दीपु निवासी खेवड़ा जिला सोनीपत के रूप में हुई।

1090 पेटियां अंग्रेजी शराब की थी बरामद

पूछताछ में उसने ट्रक में चावल भरे होने के कागजात दिखाए, लेकिन जब तिरपाल हटाकर जांच की गई तो चावल के कट्टों के आगे बड़ी मात्रा में शराब की पेटियां मिलीं। आबकारी विभाग की मौजूदगी में जांच करने पर कुल 1090 पेटियां अंग्रेजी शराब विभिन्न ब्रांड की बरामद हुई। इस मामले में थाना मुरथल में आबकारी अधिनियम की धाराओं के तहत अभियोग दर्ज किया गया था।

रिमांड के दौरान की जाएगी पूछताछ

पहले ही चालक दीपक को गिरफ्तार किया जा चुका था। अब जांच के दौरान अन्य संलिप्त सरताज और हरपाल को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस रिमांड के दौरान उनसे नेटवर्क और सप्लाई से जुड़े अन्य पहलुओं की पूछताछ की जाएगी।

संस्कार युक्त शिक्षा से ही सशक्त बन पाएगा समाज : विजया शर्मा

गोहाना। कार्यक्रम में अतिथि महिलाओं को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए शिक्षिकाएं।

■ गीता विद्या मंदिर में विद्या भारती हरियाणा प्रांत का सप्तशक्ति संगम मातृ सम्मेलन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

विद्या भारती हरियाणा प्रांत के तत्वावधान में सप्तशक्ति संगम के अंतर्गत शनिवार को गीता विद्या मंदिर गोहाना में मातृ सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन का उद्देश्य समृद्ध भारत के निर्माण हेतु मातृशक्ति को जागृत कर समाज परिवर्तन का संकल्प सुदृढ़ करना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ शिशुवाटिका प्रमुख सुनीता वर्मा द्वारा प्रस्तावना प्रस्तुति के साथ हुआ। मुख्य वक्ता उत्तर क्षेत्र तरुणी प्रमुख राष्ट्र सेविका समिति की प्रचारिका विजया शर्मा ने नारी शक्ति को राष्ट्र निर्माण की आधारशिला बताते हुए कहा कि संस्कारयुक्त शिक्षा एवं सशक्त परिवार व्यवस्था से ही सशक्त समाज का निर्माण संभव है। विशिष्ट अतिथि नगर परिषद गोहाना की चेयरपर्सन रजनी विरमानी और नागरिक अस्पताल गोहाना में महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. छवि राठी रहे। कार्यक्रम में आचार्या कोमल एवं विनिका ने महान नारी विषय पर आधारित छद्म वेश प्रस्तुति में रानी पद्मावती, डॉ. ऋतु करिधल, सावित्रीबाई फुले, अहिल्याबाई होल्कर, अनु कुमारी, मिताली राज, स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर, सुषमा स्वराज, पीवी सिन्धु, अरुणिमा सिन्हा व किरण बेदी के रूप में दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया। इस अवसर पर सीमा रानी, रजनी, अंजु और प्रियंका उपस्थित रहे।

छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को लेकर क्षमता निर्माण सेमिनार

मानसिक समस्याओं की पहचान एवं समाधान पर विस्तार से दी जानकारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

रौनक पब्लिक स्कूल में विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समग्र कल्याण को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से क्षमता निर्माण कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में संसाधन व्यक्ति के रूप में शालिनी जैन एवं दीपमाला ने सहभागिता की। दोनों विशेषज्ञों ने मानसिक स्वास्थ्य की महत्ता, तनाव प्रबंधन, सकारात्मक सोच, भावनात्मक संतुलन तथा विद्यार्थियों की मानसिक समस्याओं की पहचान एवं समाधान जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत एवं उपयोगी जानकारी साझा की।

विभिन्न जिलों से शिक्षकों ने लिया भाग

निरंतर आयोजित किए जाएंगे कार्यक्रम

उनके संवादात्मक सत्रों ने उपस्थित शिक्षकों को अत्यंत प्रेरित किया। कार्यक्रम में करनाल, रोहतक, गुरुग्राम, सोनीपत, गन्नौर एवं पानीपत से आए शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रधानाचार्य रजनी शर्मा ने कहा कि विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य उनके शैक्षणिक एवं व्यक्तिगत विकास का महत्वपूर्ण आधार है और भविष्य में जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम निरंतर आयोजित किए जाते रहेंगे। कार्यक्रम में स्कूल के शिक्षक भी शामिल रहे।

मनरेगा का नाम बदले जाने के बावजूद मिलेगा 125 दिन का रोजगार : खरखौदा

विधायक पवन खरखौदा पत्रकारों से हुए रूबरू

हरिभूमि न्यूज ▶▶| खरखौदा

विधायक पवन खरखौदा ने शनिवार को अपने रोहतक मार्ग स्थित कार्यालय में प्रेस वार्ता की। पत्रकारों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि मनरेगा योजना का नाम बदलकर विकसित भारत जी राम जी करना केवल नाम परिवर्तन नहीं है, बल्कि मजदूरों के आर्थिक विकास की दिशा में ठोस कदम है। उन्होंने कहा कि पहले योजना में कई खामियां थीं, जिन्हें अब दूर कर दिया गया है। मजदूरी के दिनों में बढ़ोतरी की गई है और अब मजदूर वर्ष में 125 दिन काम कर सकेंगे, जिसमें 25 दिन का अतिरिक्त रोजगार शामिल किया गया है।

कांग्रेस पर बेवजह राजनीति करने का आरोप

पहले किसानों के सीजन में काम न करने पर मजदूरों के दिन काट लिए जाते थे, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। मजदूर अपनी इच्छा से काम कर सकेंगे और गेहूं कटाई के समय उन्हें राहत मिलेगी। पहले मनरेगा के तहत काम करने वाले मजदूरों का काम केवल कागजों में दिखाकर पैसे का गोलमाल किया जाता था। विधायक ने कांग्रेस पर नाम बदलने को लेकर बेवजह राजनीति करने का आरोप लगाया। इस मौके पर बबीता दहिया, मुकेश सैनी, दिलावर रोहट, सुरेश दहिया, अक्षय कौशिक आदि मौजूद रहे।

भाकियू ने लल्हेड़ी, लड़सौली, पिपली खेड़ा, बड़ी और भोगीपुर में दूषित पानी की उठाई समस्या

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

भारतीय किसान यूनियन (अ) की मासिक बैठक खेड़ी रोड स्थित जाट धर्मशाला में हुई। बैठक में किसानों व आम लोगों की समस्याओं पर चर्चा की गई और प्रशासन से उनके समाधान की मांग की। जिलाध्यक्ष जयभगवान मलिक ने लल्हेड़ी, लड़सौली, पिपली खेड़ा, बड़ी व भोगीपुर गांव में पीने के दूषित हो रहे भूजल की समस्या को उठाते हुए प्रशासन से इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए इस दिशा में जरूरी कदम उठाने की मांग की। जयभगवान मलिक ने कहा कि बड़ी औद्योगिक क्षेत्र से निकल दूषित पानी से इन सभी गांवो का पानी भी दूषित होता जा रहा है।

गन्नौर। बैठक को संबोधित करते जिलाध्यक्ष जयभगवान मलिक।

प्रमुख मांगें

यदि इस दिशा में काम नहीं किया गया तो यहां के लोग गंभीर रूप से बीमार पड़ सकते हैं। इसके अलावा बैठक में राजपुरा माइनर की सही तरीके से सफाई करवाने, पुगथला गांव में चरमराई सफाई व्यवस्था को दुरुस्त करने, बजाना कला में गंदगी से अटे नाले की सफाई करवाने, राजपुर गांव में सप्लाई के पानी को व्यर्थ बहने से रोकने की मांग की गई। इस मौके पर ब्लाक अध्यक्ष बलजीत मलिक, सत्यवान, राजसिंह, ओमप्रकाश, रणधीर, रामधन, कर्मबीर आदि मौजूद रहे।

राई। कार्यशाला के प्रतिभागी शिक्षक ट्रैनरों के साथ।

विज्ञान मानव जीवन की आत्मा, जो हमें प्रगति की दिशा में आगे बढ़ाता : सोलंकी

गन्नौर। ओम शांति शिक्षा सदन विद्यालय, नाथूपुर में शिक्षकों के लिए विज्ञान विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्य राजेश गुप्ता ने संसाधन व्यक्तियों करुणा सोलंकी, मोहित शुक्ला का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। करूणा सोलंकी ने कहा कि विज्ञान मानव जीवन की आत्मा है,जो हमें ज्ञान, तर्क और तकनीकी प्रगति की दिशा में आगे बढ़ाता है। कार्यशाला के दौरान शिक्षकों को नवीकरणीय ऊर्जा, पर्यावरण संरक्षण, जीवविज्ञान, भौतिक विज्ञान और तकनीकी नवाचारों, रोबोटिक्स व आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से परिचित कराया गया। प्रधानाचार्य ने शिक्षकों से आग्रह किया कि वे इस कार्यशाला से प्राप्त ज्ञान को शिक्षण में लागू करें।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 8295154800, 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन 0130-4012310, 9253681028

बैठक | मनरेगा संशोधन और नाम बदलने के विरोध में कांग्रेस का हल्ला बोल जारी

सोनीपत कांग्रेस भवन में प्रेस कांफ्रेंस, केंद्र सरकार पर तीखा हमला

125 दिन की बात तो दूर, मजदूरों को साल में 20 दिन भी नहीं मिल रहा काम : कमल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

मनरेगा का नाम बदलने और उसमें किए जा रहे संशोधनों के विरोध में कांग्रेस का केंद्र सरकार के खिलाफ हल्ला बोल लगातार जारी है। इसी कड़ी में शनिवार को सोनीपत में कांग्रेस भवन में हरियाणा प्रदेश कांग्रेस की अनुशासन कमेटी के चेयरमैन धर्मपाल मलिक, बरोदा से विधायक इंदुराज नरवाल, जिलाध्यक्ष कमल दिवान और संजीव दहिया, पूर्व विधायक जगबीर मलिक, जयबीर वाल्मीकि, पदम दहिया, मनोज रिढाऊ, युवा नेता ललित पंवार ने संयुक्त प्रेस कांफ्रेंस कर केंद्र सरकार की नीतियों पर कड़ा प्रहार किया।

सोनीपत। पत्रकारवार्ता को संबोधित करते हुए कांग्रेस नेतागण साथ में अन्य।

सांकेतिक भूख हड़ताल करेंगे कार्यकर्ता

कांग्रेस जिलाध्यक्ष कमल दिवान ने सरकार द्वारा रोजगार उपलब्ध कराने के दावों पर सवाल उठाते हुए कहा कि सरकार 125 दिन काम देने की बात करती है, जबकि जमीनी सच्चाई यह है कि मजदूरों को पूरे साल में 20 दिन का काम भी मुश्किल से मिल पा रहा है। उन्होंने कहा कि आंकड़ों की बाजीगरी से सच्चाई नहीं छिपाई जा सकती। उन्होंने बताया कि आगामी रणनीति पर लगातार विचार किया जा रहा है।

मनरेगा मजदूर-किसान की जीवन रेखा

प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए धर्मपाल मलिक ने कहा कि मनरेगा केवल एक योजना नहीं, बल्कि ग्रामीण गरीब, मजदूर और किसान की जीवनरेखा है। केंद्र सरकार जानबूझकर महात्मा गांधी के नाम से जुड़ी योजनाओं को खत्म या कमजोर करना चाहती है। मनरेगा का नाम बदलने का प्रयास इसी मानसिकता का परिणाम है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस तय कार्यक्रमों के तहत इस फैसले का सड़कों से लेकर संसद तक विरोध करेगी। बरोदा से विधायक इंदुराज नरवाल ने केंद्र सरकार पर तीखा जुबानी हमला करते हुए कहा कि बीजेपी को महात्मा गांधी के नाम से चिढ़ है। चाहे जीआरएमजी बिल हो या अन्य योजनाएं, बीजेपी हर जगह से महात्मा गांधी का नाम मिटाना चाहती है। उइंदुराज नरवाल ने कहा कि जब तक मनरेगा का नाम वापस नहीं लिया जाएगा, तब तक कांग्रेस यह लड़ाई लड़ती रहेगी। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि यह संशोधन लागू हुआ तो पंचायत से लेकर हर वार्ड में मनरेगा के तहत होने वाले काम प्रभावित होंगे, मजदूरों को काम की कोई गारंटी नहीं मिलेगी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान पहुंचेगा।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 11 जनवरी 2026

पिछला साल भारतीय कला, साहित्य व संस्कृति के लिए बहुत महत्वपूर्ण और उत्साहवर्धक रहा। साल के शुरुआत में यूनेस्को ने भारत के दो प्राचीन ग्रंथों 'श्रीमद्भगवद्गीता' और 'नाट्यशास्त्र' को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया, जोकि भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को वैश्विक पहचान व मान्यता देता है। वहीं साल के अंतिम महीने में यूनेस्को ने भारत के प्रमुख पर्व दीपावली को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किया। ये उपलब्धियां भारत की कला, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विरासत को विश्व में एक विशेष स्थान व मान्यता प्रदान करती हैं। कला-संस्कृति से जुड़े दिग्गज, बता रहे हैं वे इस उपलब्धि को किस तरह देखते हैं?

भारतीय सांस्कृतिक विरासत को मिली वैश्विक पहचान

ये उपलब्धियां हासिल होना हर भारतीय के लिए गौरव का पल है

पद्मश्री डॉ. भरत गुप्त
कार्यकारी उपाध्यक्ष-एनएसडी

'श्रीमद्भगवद्गीता' व 'नाट्यशास्त्र' को यूनेस्को द्वारा मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया जाना, हर भारतीय के लिए गौरव का पल है। 'श्रीमद्भगवद्गीता' एक प्राचीन ग्रंथ है, जिसे सदियों से खूब पढ़ा जा रहा है। 'नाट्यशास्त्र' को लेकर मुझे विशेष प्रसन्नता है, क्योंकि पश्चिम के लोग अभी भी इस बात को नहीं जानते कि 'नाट्यशास्त्र' रंगमंच की व्याख्या है और इतनी व्यापक व्याख्या और कहीं नहीं है। बेशक कुछ पश्चिम के लोग नाट्यशास्त्र के विषय में जानते हैं लेकिन अब और विदेशी इसे पढ़ेंगे। दोनों ग्रंथों को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में रखवाने में आईजीएनसीए की बड़ी भूमिका रही। मैं आईजीएनसीए में ट्रस्टी हूं, हमारी पूरी टीम इस काम में लगी थी।

'श्रीमद्भगवद्गीता' दर्शन का ग्रंथ है, जिसमें कर्म, योग, ज्ञान और भक्ति की व्याख्या है। जीवन में क्या करना है, जीवन कैसे, किन मूल्य को लेकर जीना है, आप कैसे कर्म करेंगे? यह हमें गीता सिखाती है। इस तरह 'श्रीमद्भगवद्गीता' एक योद्धा की किताब है। उस योद्धा की मानसिकता की मनोदशा, हम सभी की जिंदगी में कभी न कभी किसी न किसी रूप में आती रहती है। गीता हमें सिखाती है कि श्रेष्ठ जीवन कैसा हो? जीवन जैसा भी है, अच्छा, बुरा, कुछ ऊंचे पात्र, कुछ नीचे, नायक, खलनायक इन सबको दिखाने वाला ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' है। गीता के संदेश को हम बच्चे से लेकर बुजुर्गों तक नाटक के माध्यम से पहुंचा सकते हैं। इन ग्रंथों को जनता तक पहुंचाना बहुत जरूरी है।

दीपावली के संदर्भ में यही कहूंगा कि यूनेस्को ने इसे सांस्कृतिक धरोहर माना है। यह गर्व की बात है लेकिन अब हमें देखना होगा कि क्या हम दीपावली को उसके मूल स्वरूप में मना रहे हैं? साथ ही विजया दशमी के महत्व को समझें, तभी दीपावली का सही अर्थ समझ आएगा। *

भारतवासियों के लिए विश्वस्तर की यह बड़ी उपलब्धि है

रोहित त्रिपाठी अभिनेता-निर्देशक, अध्यक्ष-अपस्टेज आर्ट ग्रुप

नाट्यशास्त्र को यूनेस्को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल करना दर्शाता है कि हमारा नाट्यशास्त्र प्राचीन नाट्यमंच पद्धति है। पूरे विश्व में यह स्वीकारोक्ति हुई है कि नाट्यशास्त्र वह ग्रंथ है, जिसमें हमें मंच पर प्रस्तुत करने की सारी विधाएं प्राचीन काल से बताई गई हैं। इसे अब यानी लंबे इंतजार के बाद वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया गया, जबकि यह काम बहुत पहले हो जाना चाहिए था। विश्व की यह स्वीकारोक्ति हमें बताती है कि विश्व के जितने भी महान रंगकर्मी हुए, उन्होंने कहीं न कहीं हमारे नाट्यशास्त्र से गहन अध्ययन किया और अपनी एक थ्योरी बनाकर प्रकाशित की। यह बहुत खुशी की बात है कि अभी हाल ही में दीपावली को अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में शामिल किया गया। इससे प्रतीत होता है कि हमारी सनातन परंपरा और उसके उत्सव विश्व को आगे ले जाने में कितनी मदद करते हैं। यह हम रंगकर्मियों के लिए भारतवासियों के लिए विश्वस्तर की एक बड़ी उपलब्धि है। स्वामी विवेकानंद ने इसीलिए कहा था कि समस्त विश्व के लोग हमारे भाई-बहन हैं। हम विश्व के कल्याण के लिए काम करते हैं। यह हम सभी रंगकर्मियों के लिए गर्व की बात है कि हमारे पास नाट्यशास्त्र है। बस उसे सरलतम बनाकर प्रस्तुत करने के लिए हमारे देश के विद्वानों को आगे आना चाहिए ताकि हर रंगकर्मी तक वह उनकी सरल भाषा में पहुंच सके। वे उसे समझकर अपना ज्ञानवर्धन कर सकें। *

{ आवरण कथा }

यह देश के लिए सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ऐतिहासिक क्षण है

डॉ. संध्या पुरेचा अध्यक्ष-संगीत नाटक अकादमी

यूनेस्को द्वारा प्राचीन ग्रंथों 'नाट्यशास्त्र' और 'श्रीमद्भगवद्गीता' का पंजीकरण तथा दीपावली का भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में घोषित होना, भारत के लिए अत्यंत गौरव, आत्म-सम्मान के साथ ही सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ऐतिहासिक क्षण है। यह केवल अंतरराष्ट्रीय मान्यता नहीं बल्कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा, दार्शनिक दृष्टि और जीवन मूल्यों की वैश्विक स्वीकृति है।

'नाट्यशास्त्र' भारतीय कलाओं की आत्मा है। यह रंगमंच, नृत्य और संगीत का शास्त्र होने के साथ-साथ मानव भावनाओं, रस अभिव्यक्ति और सौंदर्यबोध का वैज्ञानिक और सार्वकालिक ग्रंथ है। वहीं 'श्रीमद्भगवद्गीता' कर्म, धर्म, भक्ति और ज्ञान के माध्यम से मानव जीवन के लिए एक सार्वभौमिक दर्शन प्रस्तुत करती है। इन दोनों ग्रंथों को यूनेस्को में स्थान मिलना यह सिद्ध करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आज भी संपूर्ण मानवता के लिए प्रासंगिक और मार्गदर्शक है। दीपावली का अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता पाना भारत की लोक-आस्थाओं और सांस्कृतिक चेतना की वैश्विक स्वीकृति है। यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि सामाजिक एकता, नैतिक मूल्यों, आशा और सद्भाव का उत्सव है, जो संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधता है और मानवता को सकारात्मक ऊर्जा का संदेश देता है। इन उपलब्धियों का भारत की सांस्कृतिक कूटनीति, कला, शिक्षा, अनुसंधान, पर्यटन तथा परंपरागत ज्ञान के संरक्षण और संवर्धन पर दूरगामी प्रभाव होगा। इससे हमारी युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़ने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के वैश्विक महत्व को भी समझ सकेगी। संगीत नाटक अकादमी भी इस दिशा में सतत प्रयास करेगी कि हमारी परंपराएं जीवंत बनी रहें, अगली पीढ़ियों तक पहुंचे और वैश्विक मंच पर गरिमापूर्ण ढंग से प्रस्तुत हों। *

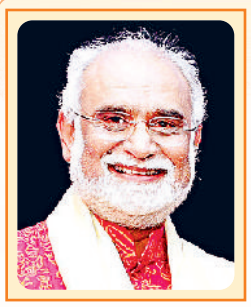

हम सांस्कृतिक पुनर्जागरण का युग देख रहे हैं

डॉ. सच्चिदानंद जोशी सदस्य सचिव-इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र

हम सांस्कृतिक पुनर्जागरण का युग देख रहे हैं। स्वतंत्रता से पूर्व हम गुलाम मानसिकता में जीते रहे इसलिए हमें हमारी सांस्कृतिक विरासत व वैभव का अहसास नहीं हुआ। हमारी अस्मिता बोध को जगाने का काम इस समय हो रहा है। यह निरंतर प्रक्रिया चल रही है। विरासत भी विकास भी, का मंत्र लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं। इस दृष्टि से देखें तो पिछला एक साल उसी निरंतर किए जा रहे कार्यों का गौरवशाली साल रहा। पहले हमने 'नाट्यशास्त्र' व 'श्रीमद्भगवदगीता' को यूनेस्को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में दर्ज कराया। यह इस बात को रेखांकित करता है कि हमारी परंपराएं कितनी पुरानी हैं, हमारी सांस्कृतिक जड़ें कितनी गहरी हैं। श्रीमद्भगवद्गीता को काफी पहले से ही विश्वभर में बहुत आदर, सम्मान के साथ पढ़ा जाता रहा है। अब जब हमारा नाट्यशास्त्र वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल होता है तो हमें पूरे विश्व को यह बताने का अवसर मिलता है कि ऐसा शास्त्र हमारे यहां दो हजार साल पूर्व लिखा गया। तब जबकि विश्व की अधिकांश सभ्यताएं इस पूरे शास्त्र के बारे में जानती भी नहीं थीं। इस दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण है। दीपावली का अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर में शामिल होना, हमें विश्व को यह बताने का अवसर देता है कि हमारे देश में पर्व मनाने की निरंतरता कितनी बड़ी है। साथ ही यह भी कि हमारे पर्व किस तरह से सर्वसमावेशी हैं। हमने किस तरह अपनी पुरातन परंपराओं को मान्यताओं को बचाकर रखा है और आगे तक बचाने का संकल्प किया है। इस तरह विश्वस्तर पर ये तीनों उपलब्धियां हमारे लिए बहुत मायने रखती हैं। *

प्रस्तुतिः रेनू खंतवाल

विशेषः राष्ट्रीय युवा दिवस, 12 जनवरी

स्वामी विवेकानंद ने न केवल भारत की सांस्कृतिक श्रेष्ठता को संपूर्ण विश्व में प्रतिष्ठित किया, यहां की धार्मिक चेतना का पुनर्जागरण करने में भी भूमिका निभाई। यही नहीं लगभग सवा सदी से अधिक समय गुजरने के बाद भी स्वामी विवेकानंद, देश के युवाओं के लिए आदर्श और अद्वितीय मार्गदर्शक बने हुए हैं।

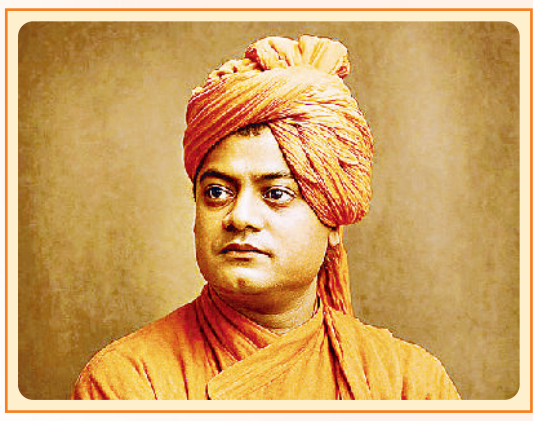

स्वामी विवेकानंद आज भी हैं युवाओं के आदर्श-मार्गदर्शक

{ प्रेरक व्यक्तित्व }
शिखर चंद जैन

ब्रिटिश शासनकाल के समय पश्चिमी देश, भारत की उपेक्षा किया करते थे। दरअसल, वे हमारे देश की अद्वितीय सनातन संस्कृति और गौरवमयी सभ्यता से परिचित ही नहीं थे। ऐसे समय में 12 जनवरी 1863 को जन्मे स्वामी विवेकानंद (बचपन का नाम नरेंद्र) ने युवावस्था में ही दुनिया में भारतवर्ष का मान बढ़ाने में अभूतपूर्व भूमिका निभाई।

भारतीय संस्कृति को दिलाया मानः स्वामी विवेकानंद, भारत के पहले युवा संत थे, जिन्होंने सनातन धर्म का संदेश विश्व भर में फैलाया और इसकी महत्ता पूरे विश्व को समझाई। उन्होंने विश्व में सनातन मूल्यों, धर्म और भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को स्थापित किया और इसका मान बढ़ाया। 11 सितंबर, 1893 को अमेरिका स्थित शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में उनके भाषण ने दुनिया भर के धार्मिक और आध्यात्मिक संतों पर एक अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने अपने उद्बोधन की शुरुआत जब 'मेरे प्यारे अमेरिकी बहनों और भाइयों' से की तो पूरा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इस पर उन्होंने कहा, 'जिस गर्मजोशी और सौहार्दपूर्ण माहौल में मेरा स्वागत किया है, उससे मेरा हृदय गद-गद है। भारत भूमि के सभी समुदायों, वर्गों, लाखों-करोड़ों भारतीयों की तरफ से मैं आपको कोटि-कोटि धन्यवाद देता हूं।' उन्होंने यह भी कहा, 'मुझे उस धर्म व राष्ट्र से संबंध रखने पर गर्व है, जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिकता का पाठ सिखाया। हम न केवल सार्वभौमिक सहनशीलता में विश्वास रखते हैं बल्कि सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं। मुझे भारतीय होने पर गर्व है, जिसने विभिन्न राष्ट्रों के पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है।'

धार्मिक सहिष्णुता के पक्षधरः भारतीय संस्कृति के मूल भाव धर्मनिरपेक्षता को वे बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने सदैव सार्वजनिक संस्कृति के रूप में धार्मिक सहिष्णुता का समर्थन किया, क्योंकि वे सद्भाव और शांति के पक्षधर थे। स्वामीजी, जाति या धर्म के आधार पर बिना किसी भेदभाव के लोगों की सेवा करने को सर्वश्रेष्ठ मानव धर्म मानते थे। उनके विचारों में धर्मनिरपेक्षता के संबंध में तुष्टिकरण के लिए कोई स्थान नहीं था। 1893 में विश्व धर्म संसद में ऐतिहासिक व्याख्यान देने के बाद उन्होंने यूरोप का भी दौरा किया। स्वामी विवेकानंद ने देश की महान आध्यात्मिक विरासत को आगे बढ़ाते हुए एकता की भावना को प्रसारित किया।

मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धाः स्वामीजी जब अमेरिका और ब्रिटेन की यात्रा कर चार साल बाद भारत लौटे तो उन्होंने यहां की पवित्र भूमि को साष्टांग दंडवत कर नमन किया। उनके मन में मातृभूमि के प्रति अपार श्रद्धा और प्रेम था। वे कहते थे कि मातृभूमि का कण-कण पवित्र और प्रेरक होता है, इसलिए इस धूलि में रमा हुआ हूं।

परम विद्वान-विनम्र व्यक्तित्वः स्वामी विवेकानंद के बारे में नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने लिखा है, 'स्वामीजी इसलिए महान हैं कि उन्होंने पूर्व और पश्चिम, धर्म और विज्ञान, अतीत और वर्तमान में सामंजस्य स्थापित किया, देशवासियों ने उनकी शिक्षाओं से अभूतपूर्व आत्म-सम्मान, आत्मनिर्भरता और आत्म-विश्वास आत्मसात किया है।' इसी ऐतिहासिक संबोधन से प्रभावित होकर प्रख्यात ब्रिटिश इतिहासकार ए.एल. बाशम ने कहा था, 'स्वामी विवेकानंद जी को भविष्य में आधुनिक दुनिया के प्रमुख निर्माता के रूप में हमेशा याद किया जाएगा।'

युवाओं के प्रेरणास्रोतः स्वामी विवेकानंद मानते थे कि युवाशक्ति ही देश, समाज और दुनिया को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ा सकती है। उन्होंने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा था 'उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए।' वे युवाओं से भरपूर आशा और उम्मीद रखते थे। उनके लिए युवा पीढ़ी ही परिवर्तन की अग्रदूत हो सकती है। वे चाहते थे कि युवाओं में विशाल हृदय के साथ मातृभूमि और जनता की सेवा करने की दृढ़ इच्छा शक्ति हो। वे युवाओं का आह्वान करते हुए कहते थे, 'देश में जहां भी प्लेग या अकाल का प्रकोप है, या जहां भी लोग संकट में हैं, आप वहां जाएं और उनके दुःखों को दूर करें। आप पर देश के भविष्य की उम्मीदें टिकी हुई हैं।'

स्वामी विवेकानंद, आधुनिक भारत के उन महानतम आध्यात्मिक गुरुओं और विचारकों में से एक थे, जिन्होंने न केवल भारतीय संस्कृति का विश्व भर में गौरव बढ़ाया, बल्कि युवाओं को ऊर्जा, आत्मविश्वास और चरित्र-निर्माण का एक नया मार्ग भी दिखाया। स्वामी जी का दर्शन और आदर्श भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत आज भी बना हुआ है। स्वामी विवेकानंद के सुझाए रास्ते पर चलकर ही एक भारत-श्रेष्ठ भारत, आत्म-निर्भर भारत और भारत को विश्व गुरु बनाने का सपना साकार किया जा सकता है। *

{ कविता }
अवतार सिंह अक्षरजीवी

आगाह

ऐसा नहीं है कि आकर्षण नहीं है
मेरी आंखों में किसी के लिए,
ऐसा भी नहीं है कि मैं कह दूं कि
मेरी भावनाएं मुझे शून्य मानती हैं,
बहुत प्रेम कर लेने के बाद
प्रेम करने का जी नहीं करता
मेरा मन इस तरह का उदार भी नहीं है,
फिर क्या सत्य है?
जो प्राप्त है, उसे पाने के बाद से
लगातार खोते चले जाना
भव्यता से खंडहर हो जाना
भरी-पूरी झील से कीचड़ हो जाना
सुर मिलना, अंत में एकाकी रह जाना
मुझे प्रेम के प्रति आगाह करता है-
प्रेम को पा लेना
प्रेम के समापन की लंबी यात्रा है,
प्रेम को न पाना
प्रेम करते चले जाने की निष्क्रियता है।

{ व्यंग्य }
भूपेंद्र भारतीय

तपेली में तरी ही बची

जैसे चुनावों के समय कुछ कार्यकर्ता निःस्वार्थ भाव से दल की सेवा करते हैं और चुनाव जीतने के बाद मेवा किसी और के हाथ लगता है। उसी तरह आखिर में मंगल जैसों की थाली में सिर्फ पतला तरीनुमा पानी रह जाता है।

मंगल के साथ पिछले दिनों बड़ा धोखा हो गया। धोखा क्या कहूं, मंगल की भाषा में यह एक तरह से 'सेवा का शिकार' होने जैसा है। या कहें, ये वही धोखा था, जो एक आम राजनीतिक कार्यकर्ता के साथ चुनाव के बाद जीतने वाला दल करता है। वैसे ही जैसे बड़े बाबू, चपरासी और कार्यालय के अन्य छोटे बाबुओं के साथ करते हैं, रिश्वत में आया अधिकांश माल बड़े बाबू निगल लेते हैं और अन्य के पास सिर्फ पतली तरी बचती है। सिर्फ दाल का पानी ही पानी, फिर उस तपेली में चम्मच हिलाते रहो। ऐसा ही पिछले दिनों मंगल के साथ हुआ। वह पिछले दिनों अपनी जाति के प्रतिभा सम्मान आयोजन में गया था, जिसे बड़ी होशियारी से समाजवादी ढंग में सामाजिक आयोजन कहा गया था। पहले आयोजन में सामाजिक नेताओं के द्वारा भाषणबाज प्रतिभाओं को जैसे जबरन पकड़कर सम्मानित किया गया हो। उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए जातिगत नेताओं द्वारा दो शब्द कहे गए। वे दो शब्द स्वयं की प्रशंसा में ज्यादा थे।

मंगल इस आयोजन में कार्यकर्ता की भूमिका में था। उसे किसी ने बोला नहीं था। ना ही चुनावी उम्मीदवारों की सूची जैसी किसी सूची में उसका नाम था और ना ही इसके लिए उसने कोई याचिका लगाई थी। वह भावुकता में चला गया। उसे सेवा करने का भी कुछ मन हुआ था। जैसे आजकल सब तरफ सेवा के लिए लोग जाते हैं। नेतागण देश की सेवा के लिए पागल हो रहे हैं। युवा अलग तरह से सेवा करना चाहता है। जैसे राष्ट्रीय स्तर पर इस देश का युवा 'देश सेवा' के लिए गलाकाट प्रतियोगी परीक्षा पास करता है और फिर कुछ ही वर्षों में सेवा के नाम पर भ्रष्टाचार के मामलों से देश के अखबारों में बड़ी-बड़ी हेडलाइन बनाता है। वहीं संसदीय और विधायी समितियों में जनप्रतिनिधि देश सेवा व नवाचार के नाम पर चार-पांच देशों की यात्रा करते हैं और जनप्रतिनिधि होने का कर्त्तव्य निभाते हैं। वैसे ही मंगल भी उस आयोजन में सेवा के लिए चला गया। जैसे युवा शुरू-शुरू में राजनीतिक-सामाजिक आंदोलनों में जाता है और भीड़ का शिकार हो या तो भावुकता में अपने हाथ-पैर तुड़वा लेता है या फिर पुलिस थाने के रजिस्टर में अपना नाम दर्ज कराकर राजनीति का स्थाई खिलाड़ी बन जाता है।

मंगल को भी लगा कि बड़े आयोजन में उसके हाथ कुछ तो आएगा। उसके जीवन में भी कुछ मंगल हो जाएगा। जैसे कर्मठ कार्यकर्ताओं की सेवा से मंत्रीजी जनसेवा करते हैं। उसे भी नेतृत्व की अग्रिम पंक्ति में आने का रोग चढ़ा। उसे भी लगा, समाज सेवा करने पर गाढ़ी तरी व साग दोनों का आनंद मिलेगा। वह भी अब नया कुर्ता-पायजामा पहनकर समाज सेवा की तपेली में अपनी सेवा रूपी चम्मच हिलाने गया था। उसने पढ़ा था, इस सेवा के लिए आजादी से पूर्व और उसके बाद बड़े-बड़े लोग, अपनी जमी-जमाई वकालत, व्यापार, जागीरदारी आदि छोड़कर इस सेवा में कूद पड़े थे। तो भला मंगल अपने समाज के आयोजन में टाट-पट्टी बिछाने से लेकर भोजन परोसने तक का काम क्यों नहीं कर सकता? आगे मंच और माइक भी मिलेगा। पूर्व में तो उसके जैसे कार्यकर्ताओं द्वारा समाज सेवा के लिए प्राण तक न्यौछावर कर दिए। क्या उन्होंने कम तरी-साग का आनंद उठाया? कैसे मालामाल हो गए! जैसे वे इस सेवा के लिए ही बने हों।

मंगल की मानें तो उस आयोजन में वह समाज सेवा के भाव से गया था। लेकिन उसका भाव वही था, जो अधिकांश सामाजिक संगठनों का रहता है। समाज में दबे-कुचले लोगों की सेवा के नाम पर सरकार से अनुदान की तरी-साग दोनों का आनंद उठाते हैं। मंगल सबको साग-तरी परोसता है। उसने सोचा यह सब मुझे भी मिलेगा। उसे भी दूसरे कार्यकर्ता तरी वाली साग परोसने आएंगे। जैसे मतदाता पांच साल में एक बार मतदान करने जाता है तो उसे लगता है कि देश अब उसके मत से चलेगा। लेकिन परिणाम देखकर कुछ दिनों में उसका मत बदल जाता है। और देश की राजनीति अपने मद में चलने लगती है। सत्ता के हाथी की चाल में उसकी आवाज दब जाती है। कहां तो वह दबे-कुचलों की आवाज उठाने आया था और चुनाव बाद वह स्वयं दबा-कुचला-सा हो जाता है।

धीरे-धीरे वह तरी-साग की सच्चाई जानने लगता है। कौन तरी खा रहा है और किसके हिस्से साग आता है? और अंत में बड़ी जनसंख्या को सिर्फ साग के पतले पानी से ही संतुष्ट होना पड़ता है। जैसे उस दिन मंगल ने बहुत मेहनत की थी। भाग-भाग कर सबको भोजन कराया। आयोजन को सफल बनाने में निःस्वार्थ भाव से सेवा की। जैसे चुनावों के समय कुछ कार्यकर्ता निःस्वार्थ भाव से दल की सेवा करते हैं और चुनाव जीतने के बाद मेवा किसी और के हाथ लगता है। उसी तरह आखिर में मंगल जैसों की थाली में सिर्फ पतला तरीनुमा पानी रह जाता है। *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

काव्यात्मक गद्य में लेखिका के मनोभाव

वर्तमान हिंदी कविता परिदृश्य में नीलेश रघुवंशी एक प्रतिष्ठित नाम हैं। कविता से इतर उनके द्वारा रचित दो उपन्यासों को भी बहुत पसंद किया गया है। अब हाल में प्रकाशित होकर आई पुस्तक 'गद्य का पानी' में उनके काव्यात्मक गद्य की रवानगी देखते ही बनती है। यह किसी एक विधा की सीमाओं में बंधी किताब नहीं है। यहां कई विधाओं का ऐसा मनोरम कोलाज नजर आता है, जो हमें लेखिका के भावजगत में उतरने, उनकी रचनात्मकता को बिल्कुल करीब से महसूसने और उनकी महीन संवेदनाओं को स्पर्श करने का रास्ता मुहैया कराता है। चार खंडों में बंटी इस किताब में नीलेश अपने अतीत से लेकर वर्तमान में आवाजाही करती नजर आती हैं। 'मन की चिट्ठी' खंड में वे मन, जीवन और समाज के विभिन्न तलों में उतरकर सृजन के रहस्य तलाशती हैं तो 'गद्य का पानी' खंड में अपने कुछ प्रिय रचनाकारों के सृजन जगत से गुजरते हुए, उत्पन्न विचारों को भी संजोती चलती हैं। उनके कुछ संस्मरणों और यात्रा संस्मरणों को 'आवारगी' खंड में पढ़ सकते हैं। अंतिम खंड 'जनरल बोगी' में संकलित उनके कुछ वक्तव्य और टिप्पणियां, हमें रचनाकार की अबूझ-अनदेखी सी सृजन भूमि में झांकने का झरोखा उपलब्ध कराती हैं। कहना चाहिए कि यह पुस्तक, पाठक को कई विधाओं से तैयार किश्ती के जरिए लेखिका के काव्यात्मक गद्य के अप्रतिम प्रवाह का आनंद लेने का अवसर प्रदान करती है। *

पुस्तकः गद्य का पानी,
लेखिकाः नीलेश रघुवंशी,
मूल्यः 399 रुपए,
प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

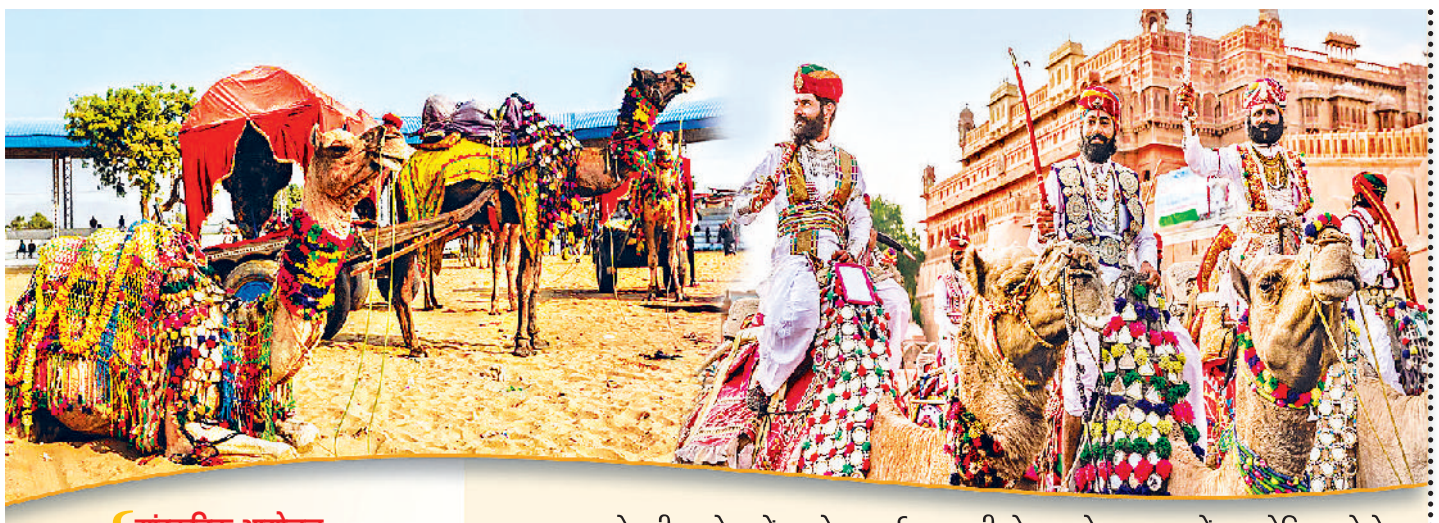

सांस्कृतिक आयोजन
धीरज बसाक

राजस्थान के बीकानेर में प्रत्येक वर्ष जनवरी के दूसरे सप्ताह में आयोजित होने वाला ऊंट महोत्सव, दुनिया भर में प्रसिद्ध है। 'रेगिस्तान का जहाज' कहे जाने वाले ऊंट के महत्व को दर्शाते और राजस्थान की लोक संस्कृति की झलक दिखाते इस महोत्सव की कुछ विशेषताओं के बारे में यहां बता रहे हैं।

लोक जीवन-संस्कृति की झलक दिखाता राजस्थान का बीकानेर ऊंट महोत्सव

बीते दो दिनों से राजस्थान के बीकानेर में चल रहे वार्षिक ऊंट महोत्सव-2026 का आज अंतिम दिन है। राजस्थान की मरुस्थलीय आत्मा, जब परंपरा-लोकजीवन और आधुनिक समय से संवाद करती है, तब बीकानेर ऊंट उत्सव जैसा अनूठा सांस्कृतिक महोत्सव जन्म लेता है। यह केवल पर्यटन आयोजन भर नहीं है बल्कि उस सभ्यता का उत्सव है, जिसने ऊंट को जीवन-सहचर बनाया है।

जीवंत संवाद रचता महोत्सवः मानव सभ्यता के विकास क्रम में शुरू से ही ऊंट बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं। विशेष तौर पर राजस्थान के लोक जीवन की बात करें तो ऊंट, यहां के लोगों की यात्राओं, व्यापार, सुरक्षा और जीविका के हर मोड़ पर सहचर के रूप में मिलता है। ऊंटों की इसी प्रासंगिकता और उनकी सांस्कृतिक उपस्थिति को राजस्थान की विशिष्ट संस्कृति के रूप में देश और दुनिया के पर्यटकों के सामने प्रस्तुत करता है बीकानेर में हर साल आयोजित होने वाला यह ऊंट महोत्सव। यह उत्सव राजस्थान की परंपरा एवं संस्कृति को मंच देता है और वर्तमान से उसका जीवंत संवाद रचता है।

वर्तमान-अतीत की झलकः राजस्थान के थार इलाके में सदियों से ऊंट, जीवनरेखा का महत्वपूर्ण अंग रहा है। यात्रा, व्यापार, कृषि और रक्षा, हर क्षेत्र में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। बीकानेर रियासत के दौर में ऊंटों की नस्ल सुधार, उनकी साज-सज्जा और प्रशिक्षण की एक विलक्षण परंपरा विकसित हुई, जिसने आगे चलकर ऊंट उत्सव की आधुनिक प्रस्तुति की रूपरेखा तय किया। यह उत्सव न सिर्फ लोकस्मृति और लोकसंस्कृति को मंच देता है बल्कि नई पीढ़ी को भी अपनी परंपरा से जोड़कर रखता है। उत्सव के दौरान सजे-धजे ऊंटों की भव्य परेड, ऊंट नृत्य, ऊंटों की सौंदर्य प्रतियोगिता और कौशल प्रदर्शन जैसी गतिविधियां मिलकर रेगिस्तान की सौंदर्य भाषा को अनंत विस्तार देते हैं। लोकसंगीत, कालबेलिया और घूमर की थाप पर जब ऊंट लयबद्ध ढंग से चलते हैं, तो लगता है समय ठहर गया है और दर्शक इतिहास के साथ वर्तमान को एक फ्रेम में देख रहे हैं।

हर गतिविधि करती है आकृष्टः भव्य ऊंट शोभा परेड, ऊंट नृत्य, ऊंट करतब, ऊंट सौंदर्य प्रतियोगिता, ऊंट दौड़ और कौशल प्रदर्शन, लोकसंगीत, कालबेलिया और घूमर जैसे लोकनृत्य, शिल्प, खान-पान मेला और दीप प्रज्वलन की सांस्कृतिक संध्या, इस उत्सव के मुख्य आकर्षण होते हैं। ऊंट परेड में जहां सजे-धजे ऊंटों की भव्य रंग-बिरंगी कदमताल देखने को मिलती है, वहीं ऊंट नृत्य कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित ऊंट, लोक धुनों पर लयबद्ध होकर थिरकते हैं। अपनी तरह के अनोखे आयोजन ऊंट सौंदर्य प्रतियोगिता के तहत ऊंटों की कद-काठी, साज-सज्जा और चाल-ढाल के आधार पर किसी एक सर्वश्रेष्ठ ऊंट को विजेता चुना जाता है। ऊंट दौड़ के कौशल प्रदर्शन में मरुस्थलीय मैदानों में गति और नियंत्रण का प्रदर्शन करते हुए ऊंट दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। ढोलक, खड़ताल और अलगोजा की धुनों पर नृत्य करतीं राजस्थानी महिला नृत्यांगनाएं, कालबेलिया और घूमर जैसे लोक नृत्यों पर राजस्थानी लोक-संस्कृति का उत्सव प्रस्तुत करती हैं। इस महोत्सव में ऊंट के ऊनी उत्पाद, कशीदाकारी, मिट्टी के शिल्प जैसे प्रसिद्ध राजस्थानी शिल्प का उत्सव भी सजता है। खान-पान की बात करें, तो इस उत्सव में बीकानेरी भुजिया, रसगुल्ला तथा घेवर जैसे पारंपरिक व्यंजनों का पर्यटक बड़े चाव से स्वाद लेते हैं।

कई रूपों में है महत्वपूर्णः बीकानेर ऊंट उत्सव, राजस्थान और देश के सांस्कृतिक उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इससे देश की भव्य विरासत का संरक्षण भी संभव होता है। इससे ऊंट पालन, पारंपरिक साज-सज्जा और लोककला का दस्तावेजीकरण व मंचन होता है। इससे विलुप्त होती परंपराओं को नया जीवन मिलता है। देश-विदेश से आने वाले पर्यटक राजस्थान की लिविंग कल्चर देखते हैं, जिससे भारत की सॉफ्ट पावर को बल मिलता है। इस महोत्सव में युवाओं की भागीदारी, उन्हें आधुनिकता और परंपरा से परिचय कराता है। इन सब वजहों से ऊंट उत्सव एक अनूठा उत्सव बन जाता है।

ऊंट उत्सव के प्रमुख आकर्षणः अगर आप इस उत्सव में शामिल होने जा रहे हैं तो सुबह की परेड और शाम को होने वाले सांस्कृतिक आयोजन में हिस्सा लेने से न चूकें। इस उत्सव में आपको स्थानीयता का भरपूर रस मिलेगा, जो इस उत्सव की विशेष खूबी है। उत्सव में लोक संस्कृति, खान-पान और हस्तशिल्प का सौंदर्य देखने को तो मिलता ही है। इस उत्सव में अगर शामिल होने के लिए आप आ रहे हैं तो आस-पास के अन्य ऐतिहासिक दर्शनीय स्थलों की यात्रा करने का अवसर भी मिल जाता है। कुल मिलाकर बीकानेर का ऊंट उत्सव एक ऐसा उत्सव है, जिससे रंगीले राजस्थान की धज बनती है। *

तन-मन में करे ऊर्जा का संचार सांस्कृतिक पर्व मकर संक्रांति

मकर संक्रांति पर्व की धार्मिक, सांस्कृतिक महत्ता तो है ही, इसके स्वास्थ्य संबंधी कई पहलू भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। यहां जानिए, इस पर्व से जुड़ी उन परंपराओं के बारे में, जो शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य को बेहतरी प्रदान करते हैं।

पर्व-महात्म्य / डॉ. मोनिका शर्मा

मकर संक्रांति केवल एक धार्मिक, सांस्कृतिक या पारंपरिक त्योहार भर नहीं है। यह सामाजिक समरसता, मेल-जोल और मदद के उन मानवीय भावों से जुड़ा उत्सव है, जिनकी आज के बिखरते भरोसे के परिवेश में बहुत अधिक दरकार है। अहम बात यह भी है कि यह उत्सव सेहत बनाने और संवारने का पाठ भी पढ़ाता है। बीते कुछ बरसों में रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी होने की महत्ता को हमने अच्छे से समझ लिया है। परंपरागत खान-पान और संतुलित जीवनशैली का महत्व भी अब और गहराई से समझ आया है। ऐसे में मकर संक्रांति जैसे पर्व से जुड़ी हमारी मान्यताएं और क्रिया-कलाप स्वास्थ्य सहेजने वाली हैं।

सधी दिनचर्या की अहमियतः यह त्योहार ना केवल हमारे रहन-सहन, खान-पान और दिनचर्या में बदलाव लेकर आता है बल्कि सेहत के लिए भी कई संदेश लिए है। गुनगुनी धूप वाले इस मौसम में हमारी दिनचर्या ही बदल जाती है। यह पर्व, प्रकृति के जरिए स्वास्थ्य को सहेजने की सीख देता है। मकर संक्रांति पर सूर्य के उत्तर दिशा में जाने से दिन बड़े होने लगते हैं और इसी के साथ वसंत ऋतु का भी आगमन होता है। मकर संक्रांति से प्रकृति भी करवट बदलती है। जो सर्दियों के बाद ऊर्जा से भरी दिनचर्या की ओर लौटने का समय होता है। ऊर्जा और उजास का यह पर्व, प्रकृति के बदलाव संग सामंजस्य बनाए हुए अनुशासित जीवन जीने की सीख देता है। आज वैज्ञानिक अध्ययन और चिकित्सकों की सलाह भी मन और तन दोनों को सहेजने के लिए सधी दिनचर्या को सबसे जरूरी बताते हैं।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए जरूरी धूपः इस पर्व पर पतंग उड़ाने की परंपरा है। यह केवल मनोरंजन भर नहीं है। पतंग उड़ाने की यह रीत सेहत से भी जुड़ी है। मौजूदा जीवनशैली में कई व्याधियां तो केवल धूप की कमी के कारण ही जड़ें जमा रही हैं। ऐसे में खुले आसमान तले छत पर पतंग उड़ाना और सूर्य की किरणों का सीधे हमारे शरीर के संपर्क में आना भी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है। अब तो वैज्ञानिक भी इस बात की पुष्टि कर चुके हैं कि धूप में बैठने से शरीर को विटामिन-डी मिलता है। कई तरह के कीटाणु खत्म होते हैं और मन भी अवसाद से दूर रहता है। नींद अच्छी आती है। ब्लड सर्कुलेशन अच्छा होता है। जिससे शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह प्राकृतिक उजास समग्र जीवन को संवारती है। मनोभावों में संतुलन लाती है। अवसाद और थकान को दूर कर ऊर्जावान जीवनचर्या से जोड़ती है।

बेहतर होती है मानसिक सेहतः सर्दियों का मौसम एक ठहराव लाता है, जिसमें मन अनमना सा रहता है। संक्रांति पर्व से मौसम का बदलाव और खिली धूप की रंगत मन को सुकून देती है। यही वजह है कि यह पर्व मन की सेहत को बेहतर बनाने वाला भी है। यह प्रकृति का आभार जताने का पर्व भी है। साथ ही सूर्य की उपासना का यह पर्व, यह भी सिखाता है कि हम देना सीखें। क्योंकि सूर्य अपना प्रकाश, ऊर्जा और रोशनी की सौगात पूरे संसार को बिना किसी भेदभाव के बांटता है। माना जाता है कि सूर्य का उत्तर दिशा में होना भी आध्यात्मिक रूप से काफी महत्व रखता है। उत्तरायण में सूर्य के होने से व्यक्ति में नई ऊर्जा का संचार होता है। इस समय खिली धूप से मन को सकारात्मकता की उजास मिलती है। सूरज की किरणें पड़ने पर अच्छा महसूस कराने वाले हार्मोन, सेरेटॉनिन और एंडोर्फिन का स्राव बढ़ता है, जिससे हमारे मन को खुशनुमा अहसास की सौगात मिलती है।

त्योहारी आहार से बढ़े इम्यूनिटीः देश भर में लोग मकर संक्रांति के त्योहार पर तिल, मूंगफली, गुड़, चावल और उड़द की दाल जैसे आहार का सेवन करते हैं। इन सभी चीजों में सबसे ज्यादा महत्व तिल को दिया जाता है, जो शरीर को निरोग रखता है। मकर संक्रांति के पर्व पर जिन चीजों को खाने में शामिल किया जाता है, वे पौष्टिक होने के साथ ही साथ शरीर को ऊर्जा देने वाले भी होते हैं। इस पर्व पर खाई जाने वाली लगभग सभी चीजें रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली हैं। समझना मुश्किल नहीं कि सांस्कृतिक विरासत ही नहीं सेहतमंद रहने के मोर्चे पर भी यह त्योहार बहुत महत्वपूर्ण है। आध्यात्मिक ही नहीं वैज्ञानिक आधार भी लिए है। समझना जरूरी है कि बिखरते मन-जीवन के इस दौर में तो सामाजिक और वैज्ञानिक चेतना जगाने वाले ऐसे पर्वों की सार्थकता और बढ़ गई है। *

सजेशन
नरेंद्र कुमार

डिजिटल टेक्नोलॉजी में माहिर होना, आज कामयाबी की सबसे जरूरी मेरिट बन गई है। आज हर जगह जिस योग्यता की सबसे ज्यादा डिमांड है, वह डिजिटल टेक्नोलॉजी ही है। इस बारे में आपको पता होना चाहिए।

प्रोफेशनल सक्सेस के लिए जरूरी है डिजिटल स्मार्टनेस

आज के दौर में प्रोफेशनल सक्सेस सिर्फ डिग्री, अनुभव या पुराने सर्टिफिकेट पर निर्भर नहीं करती है। वास्तव में प्रोफेशनल सक्सेस की परिभाषा अब बिल्कुल बदल चुकी है। कंपनियों से लेकर स्टार्टअप तक हर जगह अब जिस एक चीज की योग्यता सबसे ज्यादा समझी जाती है, वह है डिजिटल स्मार्टनेस। इसलिए डिजिटल टेक्नोलॉजी में एक्सपर्ट होना जरूरी है।

आज के दौर की जरूरतः पिछले एक दशक से प्रोफेशनल वर्ल्ड में जितना तेज बदलाव हुआ है, पिछले 50 सालों में उतना बदलाव किसी क्षेत्र में नहीं हुआ। एआई आटोमेशन, रिमोट वर्क, एप इकोनॉमी ने लगभग हर सेक्टर की कार्यशैली को एक नई दिशा दी है। दरअसल, अब लगभग सभी सेक्टर्स में पेपर वर्क बहुत कम होता है। अधिकांश काम डिजिटल स्क्रीन पर ही होते हैं, इसलिए हर सेक्टर का वर्किंग सेंटर डाटा बन चुका है। मीटिंग्स अब ऑफिस में आमन-सामने बैठकर कम, ऑनलाइन ज्यादा होती हैं। इसलिए टेक एक्सपर्ट एंप्लॉइज ही कंपनी की पहली पसंद बन गए हैं। ऐसे में अगर अपने करियर में निरंतर आगे बढ़ना है तो डिजिटल स्किल में दक्षता हासिल करिए, यही एकमात्र आगे बढ़ने का जरिया है। आपके पास एकेडमिक कोई भी डिग्री हो, अगर आपमें डिजिटल स्किल नहीं है तो याद रखिए कि आसानी से नौकरी नहीं मिलने वाली। अगर मिल भी गई तो आप अपने करियर में बहुत आगे तक ग्रो नहीं कर पाएंगे।

हर सेक्टर के लिए है जरूरीः प्रोफेशनल करियर कोई भी हो, लेकिन आज हर सेक्टर के लिए डिजिटल टेक्नोलॉजी जरूरी हो चुकी है। फिर चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, स्वास्थ्य का क्षेत्र हो, कृषि क्षेत्र हो, बैंकिंग हो, पत्रकारिता हो, कानून हो, बिजनेस या इंजीनियरिंग हो, हर क्षेत्र डिजिटल टेक्नोलॉजी से ही संचालित होता है। इसलिए आज किसी भी करियर के लिए ये क्षमताएं जरूरी हैं। जानकारी खोजने की डिजिटल क्षमता, ई-मेल हैंडलिंग, ऑनलाइन कम्युनिकेशन, सोशल मीडिया मैनेजमेंट, एआई टूल्स का उपयोग, एक्सेल पावर, वीआई जैसे डाटा टूल्स, टीम वर्क के लिए जूम, स्लैक, टीम्स जैसे प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल, सोशल मीडिया और डिजिटल ब्रांडिंग जैसी स्किल्स जो व्यक्ति अपने करियर में नहीं अपनाता या अपनाने की क्षमता नहीं रखता, तो समझिए वो मॉडर्न जॉब मार्केट से आउटडेटेड हो जाएगा।

एआई को बनाएं अपना कुलीगः बीते कुछ वर्षों में एआई, हर प्रोफेशनल सेक्टर में हमारा कुलीग बनने के दौर में प्रवेश कर चुका है। एआई अब सिर्फ मशीन टूल नहीं, कई कामों में मददगार बन चुका है। एआई अब प्रोफेशनली आगे बढ़ने में बहुत हेल्पफुल हो सकता है। यह ऐसे तरीकों से आपकी मदद कर सकता है, जिसके बारे में पहले कभी सोचा भी नहीं गया था। प्रेजेंटेशंस को तैयार करना, प्रोजेक्ट की प्लानिंग करना, कोड-ऑटोमेशन, इंटरव्यू की तैयारी और नए स्किल्स सीखने में यह बहुत हेल्पफुल साबित हो रहा है। आज एआई के उपयोग करने वाले प्रोफेशनल रूटीन वर्क को दूसरे लोगों के मुकाबले 40 से 50 फीसदी कम समय में कर लेते हैं। जाहिर है, दूसरों से ज्यादा प्रोफेशनल ग्रोथ कर पाते हैं। इसलिए अपने करियर में मनचाही कामयाबी चाहते हैं, लेकिन अभी तक डिजिटल टेक्नोलॉजी में दक्ष नहीं हैं तो बिना देर किए सबसे पहले इसमें दक्षता हासिल कर लें।

हर सेक्टर के लिए अलग डिजिटल टूलः आज कंपनियां अपने लिए एंप्लॉइज रिक्रूट करते समय यह नहीं पूछतीं कि आप कंप्यूटर जानते हैं या नहीं बल्कि पूछते हैं, आप कौन-सा डिजिटल टूल कितनी दक्षता से इस्तेमाल कर सकते हैं? क्योंकि आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसके लिए कोई विशेष डिजिटल स्किल न मौजूद हो। जरा इन कुछ डिजिटल तकनीकों पर नजर दौड़ाइए और फिर सोचिए इनमें से किस टूल में दक्ष होना आपके प्रोफेशनल ग्रोथ के लिए जरूरी है। जैसे-डाटा एनालिटिक्स, साइबर सिक्यूरिटी बेसिक्स, सोशल मीडिया मैनेजमेंट, ऑटोमेशन टूल्स, एक्सेल एडवांस, ग्राफिक-वीडियो टूल, सीआरएम/ईआरपी सॉफ्टवेयर, एआई सपोर्ट, वर्क फ्लो आदि। इन सारे के सारे टूल्स को ऑपरेट करना अब प्रोफेशनल मेरिट लिस्ट का आधार बन चुका है और करीब-करीब हर क्षेत्र की जॉब का हिस्सा बन चुका है।

पावरफुल है डिजिटल नेटवर्किंगः अब नॉर्मल रेज्यूमे से कहीं ज्यादा लिंक्डइन जैसे प्लेटफॉर्म शक्तिशाली साबित हो रहे हैं। यहां की आपकी तस्वीर, प्रोफाइल, पोस्ट, कमेंट, बातचीत, सब आपकी डिजिटल पहचान बनाते हैं। डिजिटल नेटवर्किंग के बहुत फायदे हैं। इससे अच्छे प्रोफेशनल अवसरों तक सीधे पहुंच बनती है। इंडस्ट्री लीडर से सीधा संवाद होता है। कई तरह की नौकरियों का पता चलता है। किसी खास प्रोजेक्ट और फ्रीलांस काम करने का भी अवसर मिलता है। इसके जरिए हर प्रोफेशनल अपने आप में सेल्फ ब्रांड बन सकता है, यह कंसेप्ट भी डिजिटल मीडिया से ही आया है। आज 50 प्रतिशत से ज्यादा कॉर्पोरेट जॉब्स डिजिटल रेफरल या नेटवर्क से मिल रही हैं और यह आंकड़ा यहां रुका नहीं है, लगातार ऊपर की ओर बढ़ रहा है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि क्यों डिजिटल टेक्नोलॉजी में दक्षता आज की सबसे बड़ी जरूरत बन गई है।

ई-लर्निंग के खुले रास्तेः आज सफल करियर का मंत्र है, 'जो सीखना बंद कर देता है, वह आगे बढ़ना भी बंद कर देता है।' डिजिटल टेक्नोलॉजी की सबसे बड़ी देन है, ऑनलाइन सीखने की असीमित आजादी। कोरसेरा, उडेमी, एनबीटीएल, गूगल सर्टिफिकेट्स, यू-ट्यूब पर उपलब्ध कोर्सेस, आज ऐसे अनेक प्लेटफॉर्म है, जहां जबर्दस्त असीमित ज्ञान है। लेकिन अगर आप डिजिटल टेक्नोलॉजी से अंजान हैं, तो यह सारा ज्ञान आप नहीं पा सकते हैं। इसलिए आपका रेग्युलर डिजिटल नॉलेज से खुद को अपडेट करते रहना जरूरी है। *

सिने ट्रेंड
हेमंत पाल

हिंदी फिल्म निर्माण के आरंभिक दौर से ही साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। हालांकि इन फिल्मों की सफलता का प्रतिशत कम ही रहा है। इसकी प्रमुख वजहों के साथ यहां कुछ ऐसी फिल्मों पर भी नजर डाल रहे हैं, जो साहित्यिक कृतियों पर आधारित रहीं।

साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्में कम हुईं सफल-अधिकांश रहीं असफल

किसी भी साहित्यिक कृति पर आधारित फिल्म बनाने के लिए फिल्म के निर्माता-निर्देशक और स्क्रिप्ट राइटर का उस साहित्यिक कृति के मूल भाव को समझना पहली शर्त होती है। कथाकार की भावना को समझना, उसमें मनोरंजन का पक्ष ढूंढ़ना और सबसे बड़ी बात, यह पता लगाना कि जब यह पर्दे पर आएगी तो इसे दर्शक स्वीकारेंगे या नहीं, इन बातों को जानना-समझना बहुत जरूरी है।

शुरुआत से बन रहीं साहित्यिक फिल्मेंः साहित्य और सिनेमा दोनों ही अलग विधाएं हैं। लेकिन फिल्म निर्माण के आरंभिक दौर से ही साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। हां, इस तरह की साहित्य-आधारित फिल्में संख्या की दृष्टि से कम जरूर बनी हैं। हिंदी की पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' भी भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक 'राजा हरिश्चंद्र' पर आधारित थी। बाद में प्रेमचंद की कई कालजयी कृतियों पर फिल्में बनाई गईं। कुछ फिल्में चलीं, तो कुछ को दर्शकों ने नकार दिया। साहित्यिक कृतियों पर फिल्में बनाने के अब तक कई प्रयोग हुए, पर ज्यादातर को सफलता नहीं मिली! जितना किसी साहित्यिक कृति को पसंद किया गया, उस पर बनी फिल्में उतनी सफल नहीं रहीं।

'रेणु' की कहानी पर बनी 'तीसरी कसम'

साहित्यिक कृति पर आधारित यादगार फिल्मेंः बॉलीवुड में साहित्यिक रचनाओं पर आधारित कुछ फिल्मों की बात करें तो प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' पर इसी नाम से बनी फिल्म, फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी पर बनी 'तीसरी कसम', महाश्वेता देवी की कहानी पर बनी 'रुदाली', विमल मित्र के उपन्यास पर बनी 'साहब, बीवी और गुलाम', रवींद्र नाथ टैगोर की कहानी 'नष्टनीड़' पर सत्यजीत रे की फिल्म 'चारुलता', ये कुछ यादगार फिल्में हैं। भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रलेखा' पर केदार शर्मा ने फिल्म बनाई, जो सफल भी रही। कमलेश्वर की कृतियों पर आधारित गुलजार द्वारा बनाई गई फिल्में 'आंधी' और 'मौसम' की गिनती भी साहित्य पर आधारित बेहतरीन फिल्मों में होती है। बांग्ला फिल्मकार बासु चटर्जी ने राजेंद्र यादव के उपन्यास पर आधारित 'सारा आकाश' और मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है' पर आधारित 'रजनीगंधा' जैसी प्रशंसनीय फिल्में बनाई। शरतचंद्र के उपन्यासों पर भी फिल्में बनीं, जिनमें 'देवदास' भी शामिल है।

नहीं चलीं साहित्य पर आधारित ये फिल्मेंः साहित्य पर आधारित कई ऐसी फिल्में बनीं, जिसे आशानुकूल सफलता नहीं मिली। चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' पर भी फिल्म बनी। आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास 'धर्मपुत्र' पर बीर.आर. चोपड़ा ने फिल्म बनाई। कहानीकार राजेंद्र सिंह बेदी की कृति 'एक चादर मैली सी' पर भी फिल्म बनी, पर वह भी अपेक्षा के अनुसार नहीं चली। इन फिल्मों के असफल होने का एक कारण संभवतः यह भी था कि फिल्मकार और कलाकार लेखक के मर्म को पकड़कर उसे पर्दे पर ठीक से उतार नहीं पाए! हाल के वर्षों में कथाकार काशीनाथ सिंह की मशहूर कृति 'काशी का अस्सी' पर चंद्र प्रकाश द्विवेदी ने फिल्म 'मोहल्ला अस्सी' बनाई, पर यह फिल्म भी दर्शकों की कसौटी पर खरी नहीं उतरी। अपने संवादों को लेकर फिल्म विवादों में फंसी सो अलग।

मन्नू भंडारी की कहानी पर बेस्ड 'रजनीगंधा'

साहित्य और सिनेमा में होता है अंतरः साहित्य किसी दृश्य या घटना की जो व्याख्या या विश्लेषण करता है, हर पाठक के पास वही पहुंचता है। पाठकों के स्तर में अंतर के आधार पर उसका प्रभाव भी अलग-अलग होता है। जबकि सिनेमा, दृश्य माध्यम होता हैं। उसके पास व्याख्या और विश्लेषण की सुविधा बहुत कम होती है। साहित्य में जो व्याख्या उसके प्रभाव को बढ़ा देती है, उसी व्याख्या की कोशिश सिनेमा के असर को कमजोर कर देती है। जो विवरण साहित्य की ताकत होता है, वही सिनेमा की कमजोरी बनकर सामने आता है। साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पाठक इसे पढ़ते हुए अपनी कल्पनाशक्ति से दृश्यचित्र बनाता है। जबकि सिनेमा में दर्शक को डायरेक्टर की कल्पनाशक्ति देखनी पड़ती है।

प्रभाव छोड़ने में असफल रही 'मोहल्ला अस्सी'

कमलेश्वर के उपन्यास पर आधारित फिल्म 'आंधी'

होती हैं व्यावसायिक बाध्यताएंः हर फिल्म के पीछे व्यावसायिक दबाव भी काम करता है। ये दबाव भी होता है कि मनोरंजन के बीच साहित्यकार की सोच, उसकी कृति के साथ भी पूरा इंसाफ हो। साहित्यकार अपनी कल्पना शक्ति से पाठकों को जिस कहानी से रूबरू करवाता है, फिल्मकार उसे उतनी ईमानदारी से पर्दे पर उतार भी पाता है या नहीं, ये भी ध्यान रखने वाली बात है। एक ही कहानी को अलग-अलग पाठक अपने मानस में अलग प्रभाव के साथ लेते हैं। जबकि फिल्मकार को उसे हर दर्शक के नजरिए से सजाना पड़ता है। इन्हीं कारणों से अधिकांश मशहूर साहित्यिक कृतियों के फिल्मी प्रयोग खास सफल नहीं हो पाए। इसे हिंदी फिल्मों का दुर्भाग्य ही माना जाना चाहिए कि फिल्मकारों और फिल्म से जुड़े अधिकांश लोगों का साहित्य से कोई सरोकार नहीं रहा, जबकि अन्य क्षेत्रीय और विदेशी भाषाओं में बनी कई फिल्में, साहित्यिक कृतियों से जुड़ी रहीं। हम उम्मीद कर सकते हैं आने वाले समय में शायद फिल्मकारों की नजर अच्छी कहानियों पर पड़े, वे उन्हें पर्दे पर सफलतापूर्वक उतार सकें और इस तरह की फिल्में सफल भी हों। *